thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 07 दिसम्बर 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 07 दिसम्बर 2014 से 13 दिसम्बर 2014

पौ.कृ. 1 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 134, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. चम्बा में सितम्बर मास स्वच्छता मास के रूप में मनाया गया

डी.ए.वी. सीनियर सकैंडरी पब्लिक स्कूल चम्बा में सितम्बर मास ''सम्पूर्ण स्वच्छता मास'' के रूप में मनाया गया। पूरे मास अनेक सफाई अभियानों का आयोजन किया गया। जिनमें प्रमुख कार्यक्रम विद्यालय परिसर में सफाई अभियान, कक्षा पहली पाँचवी से दसवीं के छात्रों का टीकाकरण प्रार्थना सभा में बच्चों द्वारा स्वच्छता से सम्बन्धित भाषण प्रस्तुति इसी संदर्भ में छठी तथा सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए ''चरित्र निर्माण शिविर'' का आयोजन किया गया। शिविर में 'दयानन्द मठ चम्बा

के संस्थापक' 'स्वामी सुमेधानन्द जी, मुख्यातिथि के रूप में पधारे।

पूर्णाहुति के शुभ अवसर पर ग्यारह कुण्डीय हवन का सुन्दर आयोजन किया गया। जिसमें स्थानीय समिति के उपाध्यक्ष श्री के.के. महाजन, विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अशोक कुमार गुलेरिया, अध्यापकों और बच्चों द्वारा आहुतियाँ डाली गईं। इस यज्ञ में बच्चों के अभिभावक तथा दादा, दादी जी विशेष रूप आमन्त्रित थे।

इस त्रिदिवसीय यज्ञ के दौरान वैदिक हवन–यज्ञ, वैदिक भजन–गायन, विद्वानों द्वारा शिक्षाप्रद उपदेश, योग की कक्षा, चित्रकला की कक्षा, स्वामी दयानन्द की जीवनी पर आधारित चलचित्र भी बच्चों को दिखाए गए। कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

आर्य समाज सेवा सदन पानीपत में लगा निःशुल्क नेत्र जांच शिविर

महिला आर्य समाज एवं आर्य समाज माडल टाऊन पानीपत एवं हरियाणा नेत्रहीन कल्याण परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज सेवा सदन में एक विशाल निशुल्क जांच शिविर लगाया गया जिस में अर्पणा हस्पताल मधुबन करनाल से नेत्र विशेषज्ञ एवं अनुभवी टीम ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। इस में हर प्रकार के नेत्र रोगों की जांच की गई। 380 मरीजों की OPD हुई और 65 मरीज आप्रेशन की लिए अर्पणा हस्पताल करनाल में भेजे गए।

सब मरीजों को लैन्स, दवाई व एनकें भी दी गईं। इस आयोजन की मुख्य अतिथि समाज सेवी दानी पर्यावरण शुद्ध करने वाली श्रीमति विजय पालीवाल रहीं। डॉ. वन्दना पाहूजा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। सम्मानित अतिथि के रूप में श्री सतपाल जी आर्य (हिसार) रहे। अध्यक्ष पद का दायित्व आर्य समाज के प्रधान श्री इन्द्रमोहन जी ने निभाया। कार्य क्रम का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा किया गया। दवाईयां लैबोरेट के मालिक संजय भाटिया ने भेंट कीं। प्रेम बतरा ने अतिथियों का धन्यवाद किया। शिवर का आयोजन श्री इन्द्रजीत बतरा एवं श्री गुलशन नन्दा ने किया। कार्यक्रम को देखकर श्री सतपाल जी आर्य न कहा कि, आर्य समाज के छठा नियम ''संसार का उपकार करना'' इन भाई बहनों को रोशनी देकर सिद्ध होता है। श्री के.एल. खुराना ने भी सेवाभाव को देखकर कहा कि ऐसे कार्य करने से स्वयं के मन को शक्ति मिलती है। सब कुछ परमात्मा का दिया हुआ है। वही हम दान कर रहे है।

आर्य समाज, विज्ञान नगर कोटा में वैदिक पूर्णिमा सत्संग समारोहपूर्वक संपन्न

सत्संग के माध्यम से सत्य और असत्य की पहचान होती है तथा कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य का विवेक सत्संग से ही संभव है। सत्संग का अर्थ है अच्छे व सत्य मार्ग पर चलने वाले लोगों का साथ''। उक्त विचार आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने आर्य समाज विज्ञाननगर में आयोजित पूर्णिमा वैदिक सत्संग समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किये।

कार्यक्रम का प्रारंभ डी.ए.वी. स्कूल के आर्य विद्वान व श्री शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ से किया गया। यज्ञ में सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ आहूतियां प्रदान कीं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कार्य समाज कोटा के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि जैसे सिख पंथ के प्रथम गुरु गुरुनानक देव जी महाराज के समय से ही संगत और पंगत में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता उसी प्रकार आर्य समाज में भी संगत और पंगत में कोई भेदभाव नहीं होता। ईश्वर की नजर में सब समान हैं।

आर्य विद्वान पंडित शोभाराम ने कार्तिक पूर्णिमा के महत्व की जानकारी दी। आर्य विद्वान डॉ. के एल दिवाकर एवं आर्य समाज के प्रधान जे एस दुबे ने सत्य अपनने एवं सत्य पर चलने की प्रेरणा दी।

चन्द्रप्रकाश भारद्वाज ने प्रभु भक्ति का भजन सुनाया। शांतिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 07 दिसम्बर, 2014 से 13 दिसम्बर, 2014

अविवेकी जन डूब जाते हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

भि वेना अनूषत, इयक्षन्ति प्रचेतसः।
मज्जन्त्यविचेतसः॥

ऋग् ६.६४.२१

ऋषिः **काश्यपः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (**वेनाः**) प्रभु–प्रेमी मेधावी जन, (**अभि अनूषत**) अभिमुख होकर (पवमान सोम प्रभु की) स्तुति करते हैं। (**प्रचेतसः**) प्रकृष्ट चित्तवाले विवेकी जन, (**इयक्षन्ति**) यज्ञ करने का संकल्प करते हैं। (**अविचेतसः**) अविवेकी जन, (**मज्जन्ति**) डूब जाते हैं।

●सोम प्रभु पवमान हैं, जग को पवित्र करने वाले हैं। जो मलिनता संसार में कई कारणों से उत्पन्न होती है उसे विविध साधनों से पवित्र करनेवाले सोम प्रभु यदि न होते तो मलिनता इतनी बढ़ जाती कि प्राणियों का जीवित रहना कठिन हो जाता। वे मानव के हृदय को भी पवित्र करनेवाले हैं, परन्तु उन्हीं के हृदय को पवित्र कर सकते हैं जो अपना हृदय पवित्र होने के लिए उन्हें देते हैं। प्रभु–प्रेमी मेधावी जन सोम प्रभु के अभिमुख हो उनके प्रति प्रणत होते हैं, उनकी स्तुति करते हैं, उनकी पावनता का गुणगान करते हैं, उन्हें आत्म–समर्पण करते हैं। परिणामतः वे 'प्रचेताः' बन जाते हैं, उनका चित्त प्रकृष्ट, पवित्र, ज्ञानमय और विवेकयुक्त हो जाता हैं। 'प्रचेताः' मनुष्य दीर्घद्रष्टा होते हैं। जिस यज्ञ को अन्य लोग निरर्थक समझते हैं, उन्हें वही प्यारा होता है। वह अपने जीवन में यज्ञ करने का संकल्प लेते हैं। वे सोम–यज्ञ करते हैं, सोम प्रभु के नाम से यज्ञ में आहुतियाँ डालते हैं, 'सोम' प्रभु का भजन–कीर्तन करते हैं और उससे प्रेरणा पाकर स्वयं भी साक्षात् 'सोम' बन जाते हैं। उनके जीवन में सोम–सदृश रसमयता, मधुरता और पावनता आ जाती है। 'सोम' के आदर्श को अपने सम्मुख रखते हुए वे अन्य यज्ञों का भी आयोजन करते हैं। 'सोम' प्रभु पावनता के यज्ञ को चला रहे हैं, वे भी समाज को पावन करते हैं। 'सोम' प्रभु सृष्टि–यज्ञ चला रहे हैं, वे भी सर्जनात्मक कार्यों को करते हैं। 'सोम' प्रभु पालन–पोषण और पूर्ति का यज्ञ कर रहे हैं, वे भी निर्बलों का पालन करते हैं, अपुष्टों को पुष्टि देते हैं, अपूर्णों के दोषों को दूर कर उनके छिद्र भरते हैं। यज्ञमयी नौका पर चढ़कर वे भव–सागर से पार हो जाते है। परन्तु जो 'अविचेताः' हैं, अविवेकी हैं, अल्पदर्शी हैं, वे न 'सोम' प्रभु का स्तवन करते हैं, न यज्ञ करते हैं। परिणामतः वे भव–सागर में डूब जाते हैं और दुर्गति पाते हैं। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में स्वामीजी ने बताया कि झूठ अंधकार भी है, मृत्यु भी। सत्य रोशनी भी है, अमृत भी। इसी की हम इच्छा करते हैं। इस इच्छा के पूरे होने का एक ही रास्ता है और इस रास्ते को मुझे आपके सामने रखना है। संसार आज विनाश की ओर जा रहा है। संसार का प्रत्येक दार्शनिक, विचारक, राजनीतिज्ञ, विद्वान और नेता इस चिंता में हैं कि संसार को विनाश से कैसे बचाया जाए। बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है। महाभारत के उद्योग पर्व में आता है कि जब देवता किसी की रक्षा करना चाहते हैं या किसी का नाश करना चाहते हैं तो उसके लिए विष नहीं भेजते, तलवारें नही भेजते। किसी को यह नहीं कहते कि जाकर अमुक व्यक्ति को नष्ट कर आओ। केवल एक ही बात करते हैं और वह यह कि उसकी बुद्धि बिगाड़ देते हैं। तब वह स्वयं ही ऐसे रास्ते पर चल पड़ता है जो विनाश का रास्ता है। और जब वह किसी की रक्षा करना चाहते हैं तब उसके लिए अंगरक्षक नहीं भेजते। किसी को यह नहीं कहते कि जाओ उसकी रक्षा करो। अपितु, उसकी बुद्धि को ऐसी प्रेरणा देते हैं कि वह स्वयं ही रक्षा के मार्ग पर चल पड़ता है। स्वयं ही उसकी रक्षा होती है।

अब आगे.....

दुनिया में माँगने की वस्तुएँ तो बहुत हैं – धन, दौलत, जायदाद, बीवी, बच्चे.... मैं इनका विरोधी नहीं। वेद भी इनका विरोधी नहीं। परन्तु याद रखो, यदि बुद्धि न हो तो ये सब वस्तुएँ गड्ढे में गिरा देनेवाली हैं। धन माँग लिया आपने। आपने माँगा तो ईश्वर देगा अवश्य। वह तो दयालु है। माँगने वाला चाहिए, वह अवश्य देता है। यदि इस धन को प्राप्त करके आप शराब पीने लग जाएँ, दुराचार और व्यभिचार में फँस जाएँ तो फिर यह धन तुम्हारे लिए कल्याण का कारण होगा या प्रलय का ? ऊपर ले जाएगा या नीचे गिरा देगा? धन न सही; भक्ति माँग ली आपने। मिल गई भक्ति और आप बैठ गए किसी मंदिर में; घर की सुध न बाहर की। शरीर का होश न संसार का। ऐसी भक्ति ऊपर उठाएगी या नीचे गिराएगी? धन अच्छा है, भक्ति अच्छी है, स्वास्थ्य अच्छा है, सब–कुछ अच्छा है; परन्तु तब तक जब तक वे मर्यादा में रहें मर्यादा में रखने का काम बुद्धि करती है। न इधर न उधर, बीच से होकर ले चलती है वह।

नदियाँ जब तक किनारों की मर्यादा के अन्दर बहती हैं तब तक इनसे खेतियाँ हरी–भरी होती हैं। ग्राम और नगर बसते हैं। समृद्धि जाग उठती है। परन्तु यही नदियाँ किनारों को छोड़कर, मर्यादा को तोड़कर, बाढ़ का रूप धारण कर जब गर्ज उठती हैं, तब बाढ़ आने लगती है; तबाही जाग उठती है। इसलिए हमारे शास्त्रों ने कहा है –

अति सर्वत्र वर्जयेत्!

'यह अति न करो। मर्यादा के अन्दर रहो। सीमा के अन्दर रहो।' संसार में जहाँ–जहाँ मर्यादा टूटती है, वहाँ–वहाँ तबाही और विनाश जागते हैं। जिस देश में मर्यादा न रहे, वह देश नष्ट हो जाता है। जिस समाज में मर्यादा न रहे वह समाज समाप्त हो जाता है। और यह मर्यादा क्या है?

एक नौजवान लड़का है, एक नौजवान लड़की। दोनों एक–दूसरे को चाहते हैं। लड़के के माता–पिता लड़की के माता–पिता से मिलते हैं, लड़की के माता–पिता लड़के के माता–पिता से। सब–कुछ देखकर दोनों की सगाई कर देते हैं। विवाह का दिन निश्चित होता है। बैण्ड और बाजे बजते हैं। सजे हुए बाराती आते हैं। फूलों की मालाएँ पहने हुए दूल्हा आता है। लड़की के पिता के घर में पहुँचते हैं सब लोग। लड़की पुष्पमाला से लड़के का स्वागत करती है। सुन्दर वेदी सजाई जाती है। पवित्र मन्त्रों से विवाह–संस्कार कराया जाता है। दूसरे दिन मोटर या डोली में बैठकर लड़का और लड़की दोनों घर चले जाते हैं। सब ओर से बधाइयाँ मिलती हैं। सब ओर से आशीर्वाद मिलते

thearyasamaj.org

हैं। सुख का संसार बस जाता है। यह है मर्यादा।

परन्तु यही लड़का और लड़की यदि मर्यादा को भूलकर घर से भाग निकलें, दिल्ली के रेलवे–स्टेशन से गाड़ी में बैठ–कर मेरठ की ओर चल दें, तो शोर–गुल मच जाता है। पुलिस दौड़ती है। उन्हें पकड़ लेती है। हवालात में बन्द कर देती है। मुकदमा चलता है। मान मिट्टी में मिल जाता है। सुख नष्ट हो जाता है।एक लड़का लड़की को ले गया या लड़की लड़के को ले गई। परन्तु पहली दशा में मर्यादा के अनुसार कार्य हुआ इसलिए सुख होता है, दूसरी दशा में मर्यादा तोड़ी गई इसलिए दुःख होता है।

इस मर्यादा को बतानेवाली, स्थिर रखनेवाली मेधा बुद्धि है; मर्यादा न रहे तो देश देश नहीं रहता, समाज समाज नहीं रहता, मानव मानव नहीं रहता। सब नष्ट हो जाते हैं। विनाश की ओर भागते हैं। इसलिए इस मन्त्र में मेघा को माँगने के लिए कहा गया है, अपना कल्याण करनेवाला हो, दूसरों का कल्याण करने वाला हो। प्रतिदिन तो हम माँगते हैं–

यां मेघां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु।।
यo 32 । 14 ।।

'जिस मेधा के लिए देवता लोग तरसते हैं, रक्षा करने वाले और विद्वान लोग जिसकी कामना करते हैं, उस मेघा से ही अग्निदेव! हमें मेधावाला करो। आज करो।'

ऐसे कितने ही मन्त्र वेद भगवान् में आते हैं। बार–बार वे कहते हैं, प्रातः की किरणों से मेधा माँग। दोपहर के तपते सूर्य से मेधा माँग। सायंकाल के ढलते सूर्य से मेधा माँग। ऋग्वेद में यह बात आती है। अथर्ववेद के पाँचवें काण्ड का एक सारा सूक्त ही मेधा के लिए है। यदि मेधा न हो तो अमृत भी विष हो जाता है। सगे भाई आपस में लड़ पड़ते हैं। धन कष्टदायक बन जाता है। बुद्धि के बिना दुनिया में कुछ भी नहीं होता। यह बुद्धि भी तीन प्रकार की है – बुद्धि, सबुद्धि, कुबुद्धि। परन्तु जिस बुद्धि की बात में करता हूँ, वह साधारण बुद्धि नहीं। बुद्धि से आगे चलकर मेधा आती है। मेधा से आगे प्रज्ञा जिसे प्रतिभा भी कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों के अन्दर यह प्रतिभा नाम की बुद्धि ही थी जिसने लोक और परलोक–ज्ञान उनके सामने रखा। इस तीन प्रकार की बुद्धि के अतिरिक्त एक चौथी प्रकार की बुद्धि भी है जिसे ऋतम्भरा कहते हैं। यह बुद्धि उस समय प्रकट होती है जब मनुष्य समाधि की अवस्था में पहुँच जाता है; तब केवल अटल सत्य दिखाई देता है – ऐसा सत्य जो कभी बदलता नहीं, जिसे ऋत कहते हैं। सत्य और ऋत में बहुत अन्तर है।

ऐसे कितने ही मन्त्र वेद भगवान् में आते हैं। बार–बार वे कहते हैं, प्रातः की किरणों से मेधा माँग। दोपहर के तपते सूर्य से मेधा माँग। सायंकाल के ढलते सूर्य से मेधा माँग। ऋग्वेद में यह बात आती है। अथर्ववेद के पाँचवें काण्ड का एक सारा सूक्त ही मेधा के लिए है। यदि मेधा न हो तो अमृत भी विष हो जाता है। सगे भाई आपस में लड़ पड़ते हैं। धन कष्टदायक बन जाता है। बुद्धि के बिना दुनिया में कुछ भी नहीं होता। यह बुद्धि भी तीन प्रकार की है – बुद्धि, सबुद्धि, कुबुद्धि। परन्तु जिस बुद्धि की बात में करता हूँ, वह साधारण बुद्धि नहीं। बुद्धि से आगे चलकर मेधा आती है। मेधा से आगे प्रज्ञा जिसे प्रतिभा भी कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों के अन्दर यह प्रतिभा नाम की बुद्धि ही थी जिसने लोक और परलोक–ज्ञान उनके सामने रखा। इस तीन प्रकार की बुद्धि के अतिरिक्त एक चौथी प्रकार की बुद्धि भी है जिसे ऋतम्भरा कहते हैं। यह बुद्धि उस समय प्रकट होती है जब मनुष्य समाधि की अवस्था में पहुँच जाता है; तब केवल अटल सत्य दिखाई देता है – ऐसा सत्य जो कभी बदलता नहीं, जिसे ऋत कहते हैं। सत्य और ऋत में बहुत अन्तर है।

आप पूछते हैं – "घड़ी में क्या बजा है ?" मैं उसे देखकर कहता हूँ? "9 बजकर 3 मिनट हुए हैं।" आधा घण्टे के बाद आप फिर पूछते हैं – "क्या बजा है ?" मैं कहता हूँ – "9 बजकर 33 मिनट।" दोनों बार जो कुछ मैंने कहा वह सत्य अवश्य है परन्तु ऋत नहीं।

ऋत उस सत्य को कहते हैं जो सर्वदा एक सा रहता है; प्रकृति के नियम की तरह अटल है। सूर्य रोशनी देता है, यह बात उस समय भी सत्य जब सूर्य पहले–पहले बना, आज भी सत्य है, करोड़ों वर्षों के बाद भी सत्य होगी। अग्नि जलाती है, यह बात सदा सत्य रही है, सदा सत्य रहेगी। इस अटल और न बदलनेवाली सच्चाई का नाम ऋत है। बुद्धि जब जाग उठती है, तब ऐसा ज्ञान हमारे सामने आता है जो कभी बदलता नहीं, जो महान् है, जिससे बड़ा और कोई ज्ञान नहीं।

परन्तु यह चारों प्रकार की बुद्धि प्राप्त कैसे होती है? यह बात है जो मैं आपको बताना चाहता हूँ, जिसका आने–वाले सात दिनों में वर्णन करूँगा और उस मन्त्र का वर्णन करूँगा जिसे हम प्रतिदिन पढ़ते हैं, जिसे कुछ लोग गुरुमन्त्र कहते हैं, कुछ सावित्री मन्त्र, कुछ गायत्री और जिसे मैं महामन्त्र कहता हूँ। आइए! सब मिलकर इस मन्त्र का उच्चारण कीजिए। बोलिए मेरे साथ–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।
यजु० 36 । 3 ।।

देखो! इस महामन्त्र में माँगनेवाला धन और दौलत को नहीं माँगता, जमीन और मकान को नहीं माँगता, बीवी और बच्चों को नहीं माँगता, शक्ति और साम्राज्य नहीं माँगता। केवल एक बात कहता है वह – "मालिक! मेरी बुद्धि को प्रेरणा कर। उसे अपने मार्ग पर ले चल!" इस मन्त्र का पूरा वर्णन आगे चलकर करूँगा। आज केवल यही कहना चाहता हूँ कि ठीक मार्ग पर चलती हुई बुद्धि बहुत बड़ी चीज है। इससे सब–कुछ मिलता है। बिगड़ जाए तो बहुत तबाही करती है, सब–कुछ नष्ट कर देती है–

जहाँ सुमति वहाँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति वहाँ विपति निदाना।।

सो ऐ दुनियावालो! बुद्धि बिगड़ जाए तो सब–कुछ बिगड़ जाता है। इसलिए 24 अक्षर के छोटे–से मन्त्र में, जिसे महर्षि दयानन्द ने महामन्त्र कहा, केवल बुद्धि के लिए याचना की गई है। 24 अक्षर का यह मन्त्र वैसे बहुत बड़ा नहीं। सामवेद में ऐसे–ऐसे मन्त्र हैं जो दस–दस लाइन के हैं। तब इस मन्त्र को महर्षि ने महामन्त्र कहा तो क्यों? इसको इतनी उच्च पदवी मिली तो किसलिए ? इसके एक–एक शब्द में महानता है। एक–एक शब्द का रहस्य है, आपको बताऊँगा। सबसे पूर्व इसके शब्द ओ३म् की बात सुनिए।

यह ओ३म् तो गायत्री मन्त्र से भी छोटा है, परन्तु वेद, ब्राह्मण और उपनिषद् कहते हैं, यह सबसे बड़ा है। क्यों है? कौन–सी बात है इसमें? केवल तीन अक्षर का मन्त्र है–

अ, उ, म्

तीनों से मिलकर बना ओ३म्। जितनी महिमा इस छोटे से मन्त्र की है, उतनी मैंने और किसी की नहीं देखी। वेद भी कहता है, इसका जाप करो–

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तँ शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतँ स्मर।।
यजु० 40 । 15।।

'जाप करो। न केवल जीवन में, अपितु उस समय भी जब हवा, अग्नि और न मरनेवाले आत्मा से बना यह शरीर भस्म होनेवाला हो। जब कमजोरी आ जाए, जब जीवनभर के लिए काम सामने आके खड़े हो जाएँ, उस समय भी जाप करो। उस ओ३म् का जाप करो, जो संसार को बनानेवाला है।'

परन्तु आज किसी से कहिए कि ओ३म् का जाप करो, तो वह कहता है "अवकाश नहीं मिलता।" उसके पास गप्पें मारने के लिए समय है, सिनेमा देखने को समय है, बेकार बातें करने का समय है, ओ३म् का जाप करने के लिए समय नहीं।

कुछ और लोग कहते हैं, "हमें तो ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास ही नहीं।" वास्तव में उन्हें विश्वास होता है परन्तु जाप करने में थोड़ा–सा परिश्रम करना पड़ता है, उससे छुट्टी पाने के लिए वे 'विश्वास नहीं' का बहाना कर देते हैं। कुछ और लोग कहते हैं, "जाप करने को जी तो चाहता है, ईश्वर में विश्वास भी है, परन्तु क्या करें मन नहीं लगता, भाग जाता है बार–बार।" कुछ और लोग कहते हैं – "मन भी लगता तो है कभी–कभी, परन्तु फिर तरह–तरह के विचार मन में आने लगते हैं, मन उचट जाता है।"

परन्तु देखो, घबराओ नहीं। कभी किसी हलवाई के पास उस समय जाओ जब वह खाँड की चाशनी तैयार करता है। वह बड़े–से कहाड़े में खाँड की चाशनी तैयार करता है। वह बड़े–से कहाड़े में खाँड और पानी आग पर चढ़ा देता है। थोड़ी देर में खाँड ढलती है।

कहाड़े में उफान आने लगता है, तो हलवाई दूध का एक या आधा गिलास उसमें डाल देता है। खाँड के ऊपर मैल आ जाती है, उसे हटाता है, फिर उबालता है, फिर उफान आता है, फिर दूध डालता है, फिर मैल आती है, फिर हटाता है ऐसा बार–बार करता है। दूध तो शुद्ध और साफ है, फिर ये मैल कहाँ से आती है?

हलवाई से पूछो। वह बताएगा – सह मैल खाँण्ड के अन्दर थी। बार–बार दूध डालने से वह कटती है। जब तक सारी मैल कट म जाए, खाँड भी दूध की भाँति शुद्ध और पवित्र न बन जाए, तब तक दूध डालना पड़ता है।

शेष अगले अंक में....

hearyasamaj.org

महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्गदर्शक है

● खुशहाल चन्द्र आर्य

मैं ने पहले एक लेख आदरणीय डॉ. महेश जी विद्यालंकार की पुस्तक ''ऋषि दयानन्द की अमर गाथा'' ''शीर्षक से लिखा था। उस लेख में एक लेख इसी पुस्तक से लिखी थी, दूसरा लेख इसी भाँति है।

ऋषिवर दया, करूणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाइयाँ, जहर देने वाले को क्षमा दान तथा विरोधियों को सम्मान देते थे। वे कभी अपने सुख–दुःख के लिये न चिन्तित हुए और न रोये, मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुए अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, गुरूडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिये संघर्ष करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किये रहती थी–भारत पुनः जगद्‌गुरू के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई– मनगढन्त पोपलीलाएँ कैसे दूर हों। इन झूठे पाखण्डी गुरूओं, महन्तों सन्तों आदि की इन भोली–भाली जनता को बहकाने, ठगने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे? देश सत्यज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर, कैसे दुःख, दैन्य, निर्धनता, रोग–शोक, पशुता आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा यही रही है–

इक हूक सी दिल में उठती है, इक
दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते हैं, जब
सारा आलम सोता है।।

ऋषि सदा देश के दुर्भाग्य, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोये। जो देश कभी शान्ति, सुख, मानवता और धन–धान्य का भण्डारी था। आज वह कितनी दीन–हीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें सदा बेचैन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा–एक माता मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाये हुए गंगा में प्रविष्ट हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया, रोते–बिलखते हुए बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया। ऋषि इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं सके। करूणा स्वर से बोले–हाय! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर को कफन भी नहीं जुड़ता ? उनकी आखों से आँसुओं की धारा अविरल बहने लगी। कभी यह भारत धन–धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा–पूरा था सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है? वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन–मनन करते रहे।

ऋषि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया उन्होंने व्यक्तित्व, वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया। जिधर से निकले, उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गये। अनेक राजे–महाराजे, धनी–मानी उनके शिष्य बन गये। बड़े–बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शस्त्रार्थ हुए। सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित थे। उन्होंने दुनियाँ को झुकाया, पर स्वयं नहीं झुके। दूसरों को बदला, स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तिव एवं कृतित्व में अद्‌भुत चुम्बकीय आकर्षण था। घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। वे दिव्य गुणों के खान थे। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श, शिक्षाप्रद और नव जीवनदायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन सँभाले और ऊपर उठे। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है। ऋषि का जीवन–दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है।

भोगी, विलासी और दुर्व्यसनों में फँसे मुंशीराम के जीवन को ऋषि के एक भाषण ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश–धर्म–जाति के लिए जो प्रेरक कार्य किये हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश, धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहें तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन न मिलेगा।

मुंशीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन की बुराइयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया। भजन बड़ा ही मधुर था। लोगों ने अमीचन्द के बारे में ऋषिवर को बता रखा था। सहज ही ऋषि जी की सत्य वाणी निकली–अमीचन्द! तुम हो तो हीरे मगर कीचड़ में फँसे हो। इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन को पलटकर रख दिया। बाद में इसी अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज का बड़ा प्रचार व प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नज़र में एक अद्‌भुत जादू था जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था। मृत्यु का अन्तिम दृश्य ऋषि की सहनशक्ति, आस्तिकता, प्रभुभक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गये। उनके विचार बदल गये। उन्होंने सारा जीवन आर्य मुसाफिरी में गुजार दिया। ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्यजनों को सन्देश दे गये तकरीर और तहरीर का काम बन्द न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरी में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने , मस्ताने और जनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना समिति स्थान में समीव नहीं है। उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि के जीवन की अनेक प्रेरक उदाहरण, घटनाएँ व बातें हैं, जो आज के जीवन और जगत् को संभलने, सुधरने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती हैं। स्वामी जी का जीवन खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी एक थी। उन्होंने जो कहा उसे कर दिखाया। प्रभुविश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।

महर्षि दयानन्द ने जीवन भर गलत बातों, ढोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास आदि से कभी समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान् होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान् व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। हम आर्यजन स्वार्थ, लोभ, पद आदि के लिए कदम–कदम पर सिद्धान्त विरूद्ध बातों से समझौता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। असत्य बातों से आत्मा को पतित कर लेते हैं। हमें ऋषि के प्रेरक जीवन से शिक्षा व सत्यपालन का व्रत लेना चाहिए।

180 महात्मा गान्धी रोड़
(दो तल्ला) कोलकता –700007

किसान और आत्मा

● नानक चन्द लोहिया

एक साधु काशी नगरी में किसी किसान के घर भिक्षाटन के दौरान एक बार चले गए और भिक्षा–पात्र तक देखा। साधु का शरीर पूरी तरह स्वस्थ था। वह किसान भिक्षा व दान–पुण्य को फालतू समझता था। वह बोला मैं तो किसान हूँ खेत में परिश्रम से अपना और भी कई व्यक्तियों का पेट भरता हैं। तुम विना परिश्रम के क्यों भोजन प्राप्त करना चाहते हो?

साधु ने अत्यंत शांत स्वंर के उत्तर दिया, मैं भी किसान हूँ। मैं भी खेती करता हूँ। किसान को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, फिर आप भिक्षा क्यों माँग रहे हैं। साधु ने किसान की शंका का समाधान इस प्रकार से किया। उसने कहा–हर शरीरधारी का स्वामी आत्मा है। जो उस शरीर रूपी खेत में खेती करता है। इस खेती के लिए हल–उसका ज्ञान, बीज श्रद्धा, विचार–शीलता इस के हल की फाल है, जिसे तपस्या, सतत अभ्यास रूपी जल से सींच कर यह आत्मा जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ता है। इस खेती से सफल जीवन की फसल लहलहाती है। तुम मुझे अपनी फसल का कुछ भाग दो, और मैं भी तुम्हें अपना अर्जित बाँटू तो सौदा अच्छा रहेगा। किसान को साधू की बात में कुछ स्पष्ट तो नज़र आया किन्तु संतोष न हुआ। उस ने यह बात साधु को बताई।

साधु ने कहा, मित्र, आप अपने को शरीर मात्र न समझ कर आत्मा समझो सत्य को पहचानने का प्रयास तो करें। संतोष तो परमात्मा की कृपा होने पर ही होगा।

आर्य समाज मार्ग
हल्द्वानी–263139

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

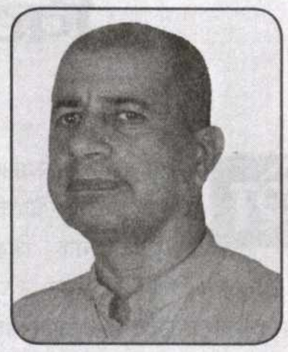

शंका – डिस्कवरी चेनल में भूत–प्रेत की कथाएँ और कथित घटनाओं का ब्यौरा दे रहे हैं। सारे घटित दृश्य भी दिखाए हैं। क्या यह असत्य है?

समाधान – जी हाँ, भूत–प्रेत की सब बातें असत्य हैं। ऐसे बहुत कार्यक्रम देखे गए, पकड़े गए जो बिलकुल झूठे और नकली थे, उन पर कोर्ट– केस भी किए गए। अहमदाबाद कोर्ट के एक वकील साहब ने मुझे ऐसी एक फिल्म दिखाई और बताया कि हमने इन लोगों पर कोर्ट–केस किया है। ये जनता को बहकाते हैं। झूठ का प्रयोग करते हैं। बड़ी चालाकी से ये लोग काम करते हैं। आम जनता समझ नहीं पाती।

ये बस चालाकी है, धोखा है, असत्य है। ऐसे लोगों की लपेट में नहीं आना चाहिए।

शंका – आज सुबह हम ध्यान में मन नहीं लगा पाए। जब गुरूजी ने कहा कि – अपनी हथेलियाँ घर्षण करके आँखों में लगाओ, उसी समय मैंने कल्पना में देखा कि हम हवन में बैठे हैं और एक लड़की आई और रखा हुआ दीपक बुझा दिया। तब से मेरा मन परेशान है?

समाधान – इसमें परेशान होने की बात नहीं है। कभी–कभी मन में ऊँचे–नीचे ख्याल आते रहते हैं। हम मनुष्यों का मन अच्छा भी सोचता है, बुरा भी सोचता है। मन पॉजिटिव भी सोचता है, नेगेटिव भी सोचता है। मन में जो विचार चलते रहते हैं, वे कभी–कभी कल्पना में आ जाते हैं। इसलिए यदि सहसा ऐसा कोई विचार कौंध गया तो घबराने या परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

इससे **ऐसा संकेत नहीं समझना चाहिए कि उसने दीपक बुझा दिया तो कोई अनिष्ट या दुर्घटना हो जाएगी।** यह तो संयोग की बात है। दुनिया में घटनाएँ–दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। पर दीपक बुझाने से उसका कोई सीधा लेना–देना नहीं है।

शंका – क्या किसी मंत्र के जाप से या यज्ञ करने से कष्ट दूर हो सकते हैं? जबकि सुना यह जाता है – **"अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतम् कर्म शुभाशुभम्।"**

समाधान – यह बात ठीक है कि हमने जो कर्म किए हैं, उनके फल तो हमें भोगने ही पड़ेंगे। रही बात यह है कि, क्या मंत्र के जाप से अथवा यज्ञ करने से कष्ट दूर हो सकते हैं? उत्तर यह है कि –

(1)**हम यज्ञ करेंगे, मंत्र का जाप करेंगे, तो भगवान हमको सहनशक्ति से कष्ट हमारे लिए हल्का हो जाएगा। कष्ट भोगना तो पड़ेगा, पर वह उतना भारी नहीं रहेगा।**

स्वामी दयानंद जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि – ईश्वर की उपासना से इतना बल प्राप्त होगा कि पहाड़ जैसा दुःख भी राई जैसा प्रतीत होगा। जो दुःख आएगा, वो तो भोगना पड़ेगा। लेकिन वह दुःख इतना भारी नहीं लगेगा, हल्का लगेगा। आराम से निपट जाएगा।

(2)मंत्र के जाप से **आगे के लिए बुद्धि अच्छी हो जाएगी।** फिर हम और अधिक अच्छे–अच्छे काम करेंगे। आगे अपराध करेंगे नहीं, तो आने वाले कष्ट टल जाएँगे। क्योंकि आगे अपराध ही नहीं करेंगे, तो पाप का दंड क्यों मिलेगा? इसलिए मंत्र जाप करना चाहिए, यज्ञ करना चाहिए।

शंका – कहा जाता है कि गायत्री मंत्र का एक लाख जाप करने वाला चोरी, ब्रह्महत्या, गुरु पत्नी के साथ व्यभिचार आदि पापकर्म से मुक्त होता है, कृपया मार्गदर्शन करें?

समाधान – यह बात जिन भी ग्रंथों में आप पढ़ते–देखते हैं, वो बात सत्य नहीं है। वेदानुकूल नहीं है, तर्क के भी विरूद्ध है, ऋषियों के भी विरुद्ध है। कारण कि :–

गायत्री मंत्र का पाठ करना एक अच्छा काम है। चोरी करना– यह बुरा काम है। अच्छे काम से बुरा काम कैंसिल नहीं होता।

मान लीजिए, लोग नाव में बैठकर नदी पार कर रहे थे। नाव में पानी भर जाने से नाव उलट गई। एक बड़ा अच्छा तैरने वाला था। उसने डूबने वाले बीस लोगों को बचा लिया। सरकार को सूचना मिली। सरकारने कहा – आपको ईनाम मिलेगा।

अब एक हफ्ते के बाद जिसने बीस लोगों की जान बचाई थी, उसी व्यक्ति ने एक आदमी को मार दिया। वो सरकार के पास गया और बोला – देखिए जी, **मैने बीस लोगों की जान बचाई है, और एक को जान से मारा है। सीधे बीस में से एक को घटाकर के उन्नीस का ईनाम दे दीजिए।** तो क्या सरकार मान लेगी? नहीं मानेगी न। सरकार ने कहा – बीस की जान बचाई, उसका अलग ईनाम मिलेगा। और एक को मारा, उसका दण्ड अलग मिलेगा। बीस में से एक कैन्सिल नहीं होता है। जब सरकार कैन्सिल नहीं करती, तो भगवान क्यों करेगा? आपने एक लाख **गायत्री जप किया, उसका अलग फल मिलेगा। चोरी की,उसका अलग दण्ड मिलेगा।** इसलिए दोनों कर्मों का फल अलग–अलग है।

।। ओ३म् की महिमा ।।

● महात्मा ओम्मुनि

योग दर्शन में कहा गया है, **'तस्य वाचक प्रणव'**, अर्थात् परमात्मा का वाचक शब्द प्रणव है। प्रणव अर्थात् ओंकार। ओंकार को **'अ'**, **'उ'**, **'म'** इन तीन शब्दों के कारण 'त्रि–मात्र' कहा जाता है और ध्यान के लिए ओंकार के जप का उपदेश दिया जाता है। यह 'ओ३म्' ही यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों में जाकर **'एमन'** या **'आमीन'** बन गया है और उनकी प्रार्थना के अन्त में हाथ उठाकर दूआ के रूप में बोला जाता है।

माण्डूक्योपनिषद् में कहा है – **'ओम् इति एतद् अक्षरम्'** ओम् – यह एक छोटा सा अक्षर है। 'इदं सर्वं तस्य उप व्याख्यायानम्' यह सब संसार उसी ओम्' की छोटी सी व्याख्या है। भारतीय अध्यात्म शास्त्र में **'ओम्'** का बड़ा महत्व है। उपनिषद् काल में सारे संसार के अध्यात्म की शिक्षा भारत से ही जाती थी। बाईबिल में लिखा है – The word was with God, the word was God. इसका अर्थ है कि– **'अक्षर परमात्मा के साथ था, अक्षर ही परमात्मा था'**। बाईबल में **'ईश्वर'** कहा है। यहूदियों ने परमात्मा को 'जिवोहा' (Jegovah) कहा है। 'जिवाहा' शब्द का ग्रीक में रेट्राग्रेमेटरेन Tetragrammaton शब्द का प्रयोग हुआ है। टेट्राग्रेमेटोन शब्द का अर्थ है – चार (Tetra- चतुर) अक्षरों (Gram - शब्द) वाला। चार अक्षरों वाला। इसी भाव को उपनिषद् में **'चतुष्पाद'** शब्द के रूप में प्रकट किया गया है, अर्थात् चार पाँव वाला। ओंकार के लिए, **'अ+उ+म्+अमात्र'**, ये चार मात्राये हैं। 'टेट्राग्रेमेटोन' – शब्द 'चतुष्पाद' शब्द का ही अनुवाद है।

कठोनिषद् में यमाचार्य नेचिकेता को ब्रह्मज्ञान देते हुए कहा था – **'सर्वे वेदाः यत्पदमामनन्ति ओम् इत्येतत्'** सभी वेद जिस अक्षर की घोषणा करते हैं, जो सभी तपों का लक्ष्य है – वह अक्षर **'ओंकार'** है। प्रश्नोपनिषद् में सत्यकाम अपने आचार्य से पूछता है – **'स: य: ह: वा एतद् भवगन् मनुष्येषु प्रायणान्त। ओंकारं अभिध्यायीत कतमं वाच सः तेन लोकं जयति'** – अर्थात् मृत्यु काल तक लगातार प्रणव का ध्यान करने से मनुष्य किन लोकों को जीत लेता है? तब आचार्य ने कहा – **'एतत् वै सत्यकामः परं च अपरं च ब्रह्म यत ओंकारः। तस्मात् विद्वान् एतेन एव आयतनेन, एकतनं अनु एति'**। हे सत्यकाम! यह जो ओंकार है यही निश्चय से **'पर'** तथा **'अपर'** ब्रह्म है। इसलिए विद्वान् व्यक्ति इसी **ओंकार** के सहारे **'पर'** तथा **'अपर'** में से किसी भी एक को प्राप्त कर लेता है।

वैसे तो 'ओम्' केवल एक शब्द मात्र है और 'ओम्' के स्थान पर ध्याान करने के लिए अन्य शब्द का उपयोग हो सकता है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषियों का 'ओम्' शब्द को चुनने में कोई विशेष अभिप्राय था। वे ध्यान के लिए एक ऐसे शब्द का प्रयोग करना चाहते थे जो जीवन से जुड़ा हुआ हो और ध्यान के लिए स्वाभाविक हो। ऋषियों की दृष्टि में 'ओम्' ही एक ऐसा शब्द है, जिसके उच्चारण से शरीर के अन्दर सभी नस–नाड़ियों में एक विशेष **'कम्पन'** होता है। जब हम श्वास लेते हैं और छोड़ते है तब **'ओ३म्'** की सूक्ष्म ध्वनि होती है, जो **'सोऽहम्'** के स्वर में प्रकट होती है। **'सोऽहम्'** शब्द से **'स'** और **'ह'** हटा दिया जाये तो 'ओ३म्' रह जाता है। इसलिए प्राणायाम में श्वास का अन्दर लेना तथा बाहर फेंकना अनजाने में **'ओ३म्'** की ध्वनि का होना है।

सभी ऋषियों ने कहा है कि – यही **चतुर्थ–पाद–ओंकार** ही आत्मा तथा ब्रह्म का शिव रूप है, कल्याणमय रूप है, अद्वितीय रूप है, सर्वेश्वर है, सर्वज्ञ है, अन्तर्यामी और ओंकार ही परमानन्द है। सम्पूर्ण वेद जिसका गुणगान करते हैं वही – **'ओंकार'** है।

इत्योम् शम्।

वैदिक भक्ति साधन आश्रम
आर्यनगर, रोहतक (हरियाणा)

thearyasamaj.org

विद्यार्थी का चरित्र उत्तम होना आवश्यक

● डा. अशोक आर्य

शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं पर विचार करते हुए वेद कहता है कि प्रत्येक शिक्षार्थी, जिसे आज हम विद्यार्थी के नाम से जानते हैं, उसका चरित्र उच्च होना आवश्यक है। चरित्रवान् होने से गुणों को ग्रहण करने की शक्ति बढ़ जाती है। कम समय में अधिक काम किया जा सकता हैं। एकाग्र बुद्धि होने से पढ़ा हुआ पाठ शीघ्र ही स्मरण हो जाता है। इस लिए वेद प्रत्येक ब्रह्मचारी के लिए उच्च चरित्र को उसका आवश्यक गुण मानता है। अथर्ववेद के अध्याय नौ के सूक्त पाँच के मन्त्र संख्या तीन में इस विषय पर ही चर्चा करते हुए बताया गया है कि :

प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं यच्चचार शुद्धैः शफैरा क्रमतां प्रजानन्।

तीर्त्वा तमांसि बहुधा विपश्यन्नजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् ।। अथर्व. 9.5.3 ।।

इस मन्त्र के द्वारा परमपिता परमेश्वर मानव मात्र को उपदेश करते हुए कह रहा है कि हे मानव! जीव होने के कारण गलतियाँ करना मेरा स्वभाव है। इस स्वभाव के कारण तू अपने जीवन में अनेक ऐसी गलतियाँ कर लेता है, जिन के कारण तेरे जीवन की उन्नति रूक जाती है। तेरा आगे बढ़ने का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है, बंद हो जाता है। इसलिए तेरे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि तू जो भी कार्य कर, बड़ी सावधानी से कर। अपनी किसी भी गतिविधि में किसी प्रकार की गलती न कर, कोई दोष, कोई न्यूनता न आने दे। छोटी सी गलती भी तेरी उन्नति में बाधक हो सकती है। इसलिए तू जो भी कार्य हाथ में ले उसमें किसी प्रकार की कमी न रहने दे, किसी प्रकार की गलती न आने दे।

हे मानव! तूने अपने जीवन में अनेक प्रकार के दुराचार किये होंगे, अनेक प्रकार के भ्रष्ट आचरण किए होंगे, अनेक प्रकार की गलतियां की होंगी किन्तु तेरे पास अवसर है। तू अपने उत्तम कर्मों से, उत्तम व्यवहारों से, सद्विचार से, इन सब प्रकार के दुराचार, सब प्रकार के भ्रष्ट आचरण को धो कर साफ कर दे। इन सब को धो कर उज्ज्वल कर दे। इस प्रकार सब दुराचारों, भृष्ट आचरणों को उज्ज्वल, शुद्ध व निर्मल करने के पश्चात् अपने आप को सब प्रकार के उत्तम ज्ञान से सम्पन्न कर। इन उत्तम ज्ञानों का स्वामी बनकर उन्नति के मार्ग पर आगे को बढ़, उन्नति को प्राप्त कर। सब जानते हैं कि सब दुराचारों से रहित व्यक्ति ही सुशिक्षा का उत्तम अधिकारी होता है।

जब किसी व्यक्ति में दुराचार होते हैं, किसी प्रकार का कपट व्यवहार करता है, किसी को अकारण ही कष्ट देता है तो दूसरे के हृदय को तो पीड़ा होती ही है, इसके साथ ही साथ जो अकारण कष्ट देता है, उसकी अपनी स्वयं की आत्मा भी उसे दुत्कारती है, उसे उपदेश करती है कि यह कार्य अच्छा नहीं है, इसे तू न कर, किन्तु दुष्ट व्यक्ति अपनी आत्मा की आवाज, जो ईश्वर के आदेश पर आत्मा उसे देती है, को न सुनकर अपनी दुष्टता पर अटल रहता है तथा बुरा कार्य कर ही देता है तो उसकी अपनी शांति ही भंग हो जाती है। यह तो वही बात हुई कि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को कष्ट देने के लिए स्वयं दो गुणा कष्ट भी सहने को तैयार मिलता है। पडौसी की दो आँखे फुटवाने के लिए अपनी एक आँख का बलिदान करने को भी तैयार रहता है। ऐसे व्यक्ति को सदा यह चिंता सताती रहती है कि कहीं किसी को मेरी इस दुष्टता का पता न चल जाए। इस सोच में डूबा वह अपने भले के लिए भी कुछ नहीं कर पाता। इस चिंता में रहने वाला विद्यार्थी अपना पाठ याद करने के लिए भी समय नहीं निकाल पाता। यदि किसी प्रकार वह कुछ समय निकाल भी लेता है तो उसका शैतान मन पाठ में न लग कर जो बुरा आचरण किया है उसमें ही उलझा रहता है। जब ध्यान अपनी पढ़ाई में न होकर अपने गलत आचरण पर है तो पाठ कैसे याद हो सकता है? अर्थात् नहीं होता और वह ज्ञान प्राप्त करने में अन्यों से पिछड़ जाता है। इसलिए ही मन्त्र ने उपदेश किया है कि हे मानव! अपनी उन्नति के लिए अपने अन्दर के सब भ्रष्ट आचरण को धो कर साफ सुथरा बना ले। साफ मन ही कुछ ग्रहण करेगा। यदि वह मलिनता से भरा है तो जो कुछ भी अन्दर जाएगा, वह मलिन के साथ मिलकर मलिन ही होता जाएगा। कूड़े की कड़ाही में जितना चाहे घी डालो, वह कूड़ा ही बनता जाता है। इस लिए मन को मलिनता रहित करना आवश्यक है।

मानव जीवन अज्ञान के अंधकर से भरा रहता है। अपने जीवन के अन्दर विद्यमान सब प्रकार के अज्ञान के अँधेरे को दूर करने के लिए ज्ञान का दीपक अपने अंदर जलाना आवश्यक है। इसके लिए निरंतर ध्यान लगाना होगा, एकाग्रता पैदा करनी होगी। जब इस प्रकार तू अपने दुरितों को धोने का यत्न करेगा तो तुझे मोक्ष का मार्ग मिलेगा। मोक्ष का मार्ग उस जीव को ही मिलता है, जो अपने जीवन के कलुष धोकर सब प्रकार की उन्नतियों को पाने का यत्न करता है। बिना यत्न के, बिना पुरूषार्थ के, बिना मेहनत के किसी को कभी कुछ नहीं मिला करता। इस लिए मन्त्र कहता है कि हे जीव! उठ, साहस कर, पुरूषार्थ कर, भरपूर मेहनत से अपने अंदर के सब दोषों को धो डाल। जब सब मलिनताएँ नष्ट हो जाने से तेरा अंदर खाली हो जाएगा तो इस खाली स्थान को भरने के लिए शुभ कर्म, उत्तम कर्म तेरे अन्दर प्रवेश करेंगे। जब तेरे अंदर सब शुभ ही शुभ होगा तो मोक्ष मार्ग की ओर तेरे कदम स्वयमेव ही चलेंगे।

इस सुंदर तथ्य पर प्रकाश डालते हुए पंडित धर्मदेव विद्यामार्तंड जी अपनी पुस्तक **वेदों द्वारा समस्त समस्याओं का समाधान वेद** के पृष्ठ 16 पर इस प्रकार लिखते है "पुनः अनेक बार अज्ञानान्धकार को ज्ञान, ध्यान, समाधि के द्वारा पार करता हुआ तेरा अजन्मा अमर सुख दुःख की सामान्य अवस्था से परे तथा दुःख रहित मोक्ष को प्राप्त करे।"

वैदिक शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण :

ऊपर वर्णित तथ्यों से यह बात स्पष्ट होती है कि वेदों के अनुसार यदि हम शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, यदि हम वेदानुसार शिक्षा पाना चाहते हैं तो हमारे लिए आवश्यक है कि हम उच्च चरित्र के स्वामी बनें। हमारी शिक्षा, जो वेद आधारित होती है, उसका सबसे मुख्य उद्देश्य चरित्र का निर्माण ही है। चरित्र ही है जो एक व्यक्ति को बहुत ऊँचा उठा सकता है तो इस का नाश होने पर यह उसे मिटटी में भी मिलाने की शक्ति रखता है। इसलिए चरित्र के उच्च अथवा स्वच्छ होने पर ही हम उन्नति के पथ पर बढ़ सकते हैं, मुक्ति के मार्ग पर चल सकते हैं।

सदाचार का पाठ पढ़ाने वाला ही आचार्य :

आज हम अपने स्कूलों में पढ़ाने वालों को अध्यापक कहते हैं। यह अध्यापक लोग हमें पढ़ाते तो हैं किन्तु सिखाते नहीं। जो आचरण हमारे जीवन में होने आवश्यक हैं, जो आचरण हमारे जीवन में आवश्यक होते हैं, उन्हें पाने के लिए एक उत्तम, एक अच्छे आचार्य की शरण में जाना आवश्यक है। जिस प्रकार हम जानते हैं कि धन सब सुखों का साधन है किन्तु वह धन ही सुख दे सकता है, जो पुरुषार्थ से कमाया जाए। जिस धन को लूट पाट कर प्राप्त किया गया हो, वह चिंता का कारण होता है, सुख नहीं दे सकता। इस लिए किसी कवि ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में कहा है कि–

जागो रे, जागो रे, हे दौलत के दीवानों
धन से बिस्तर मिल सकता
पर नींद कहाँ से लाओगे।
दौलत स्त्री दे सकती
पर पत्नी नहीं दिला सकती।

इसलिए केवल धन के पीछे भागना भी उत्तम नहीं है। जीवन के वास्तविक सार को पाने के लिए आवश्यक है कि हम अपने जीवन को भय रहित बनाएँ। जीवन भय रहित तब ही बनेगा जब हम अपने जीवन के सब कलुषों को, सब पापों को धोकर शुद्ध, साफ कर लेंगे। इन कलुषों को धोने के लिए ज्ञान को पाने के लिए ही आचार्य की आवश्यकता होती है। हम इन सन्मार्ग पर ले जाने वालों को इस लिए ही तो आचार्य कहते हैं क्योंकि वह सदाचार का पाठ पढ़ाते हुए हमें सदाचार की ओर ले जाते हैं, सदाचारी बनाते हैं। उनका हमारे लिए किया गया यह कार्य ही उन्हें आचार्य बनाता है। आचरण शब्द से ही आचार्य शब्द सामने आता है। अतः हम कह सकते हैं जो हमें सदाचार के मार्ग पर लेकर जाए, उत्तम आचरण की ओर ले जाए, वह आचार्य है।

चरित्र निर्माण ही शिक्षा :

जिस साधन से हमारे चरित्र का निर्माण हो, हम उसे शिक्षा के नाम से जानते हैं। इससे स्पष्ट है कि हमने चाहे स्कूलों अथवा कालेजों में जा कर कितनी भी शिक्षा पा ली, कितने ही बड़े–बड़े प्रमाण–पत्र प्राप्त कर लिए किन्तु हमारे अंदर सदाचार नहीं आया तो हमारी यह सब शिक्षा बेकार है। वास्तव में शिक्षा सदा चरित्र निर्माण का कार्य करती है तथा चरित्र निर्माण की ओर ही ध्यान देती है। ध्यान ही नहीं देती अपितु विशेष ध्यान देती है। इसलिए ही इसे शिक्षा की कोटि में रखा जाता है। इस कारण ही जब हम विश्व के मानचित्र पर अनेक प्रकार के शिक्षा शास्त्रियों का अवलोकन करते हैं तो हम पाते हैं कि समग्र विश्व का शिक्षाविद् इस वैदिक धारणा के सामने नत है तथा एक मत से कह रहा है कि वह इस वेदोक्त शिक्षा के, इस चरित्र निर्माण के उद्देश्य से पूर्णतया सहमत होने के साथ इस उद्देश्य का बड़ी प्रबलता से समर्थन करता है।

महर्षि दयानंद के अनुसार शिक्षा का लक्षण :

महर्षि दयानंद सरस्वती ने स्वमंत्व्यामंतव्य प्रकाश के अंतर्गत सत्यार्थ प्रकाश में शिक्षा के बड़े सुंदर लक्षण दिए हैं जो इस प्रकार हैं :

जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें, उसको शिक्षा कहते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि स्वामी जी ने उसे ही शिक्षा स्वीकार किया है, जिससे हमें उत्तम विद्या की प्राप्ति हो, जिस से हम सभ्य समाज के अंग होने के योग्य स्वयं को बना सकें, जिसके ज्ञान से हम धर्म पालन करने वाले बनें, जिससे हम जितेन्द्रिय अर्थात् अपने अंदर के सोम के रक्षण करने वाले बनें, वह सब ही विद्या अथवा शिक्षा कहलाने के योग्य है, अन्य कुछ नहीं। कुछ इस प्रकार के उद्गाद ही देश विदेश के अन्य महापुरूषों ने भी दिए हैं।

इंग्लैंड के सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री **हर्बर्ट स्पैंसर** ने तो पूर्णतया स्वामी जी की बात को ही शिक्षा के रूप में स्वीकार करते हुए इस प्रकार लिखा है **"एजुकेशन हैज इट्स ऑब्जेक्ट्स ऑफ कैरेक्टर।"** जिस का भाव यह है कि "शिक्षा का उद्देश्य चिरत्र निर्माण है।"

104 शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी 201010
गाजियाबाद, दूरभाष : 0120–2883400,
09817527067

thearyasamaj.org

जन्मदिवस मनाने की सार्थकता कैसे सिद्ध हो – आओ जानें।

● गंगा शरण आर्य

आज भोगवादी पाश्चात्य परम्परा की अंधी दौड़ में हमारे संस्कार व संस्कृति का जो मजाक बनता जा रहा है ये कब तक बनता रहेगा कुछ कहा नहीं जा सकता। वर्तमान स्थिति को देखें तो हमारे ऊपर पाश्चात्य संस्कृति का ऐसा रंग चढ़ा है कि हम ज़रा भी विचार नहीं करते कि हम क्या कर रहे हैं? हमने जिन ऋषि–मुनियों की पवित्र स्थली आर्यावर्त भारत देश में जन्म लिया और जहाँ पले बड़े हुए हैं, उसकी गौरव–गरिमा व स्वाभिमान को पाश्चात्य संस्कृति की कालिमा ने बदरंग कर दिया है। हमारे तौर तरीकों को देखिए आज पाश्चात्य संस्कृति का भूत इस कदर छाया हुआ है कि अपने बच्चों के जन्मदिवस जैसे शुभावसरों को भी हम अपनी संस्कृति के अनुसार मनाने से कतराते हैं। वैसे तो हमारी संस्कृति में गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कारों का विधान है जिसमें आत्मा संस्कारित होता है। वह तो करने–कराने की परम्परा छूट गई और उनका स्थान अब जन्मदिवसों व सालगिरह आदि ने लिया है। मैं ये नहीं कह रहा कि जन्मदिवस न मनाना चाहिए। जन्मदिन मनाना जीवन का ऑकलन करना है अर्थात् जन्मदिवस के दिन अपने जीवन का ऑकलन करना न भूलें जो मुख्य काम है। आज कुछ लोग अपनी संस्कृति के नाम पर यज्ञ–हवन आदि भी करते–कराते हैं, यहाँ तक कि प्रातःकाल गरीबों, जरूरतमंदों या अनाथालयों में रहने वाले बच्चों के भोजन वस्त्रादि की व्यवस्था भी करते हैं लेकिन शाम को फिर अपने ऊपर हावी हुई पाश्चात्य परम्परा का अनुकरण करते हुए सोचते हैं कि उन्होंने अपनी संस्कृति के साथ–2 आज आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति के तरीके से भी जन्मदिवस मनाकर बहुत बड़ा काम कर दिया जबकि वास्तविकता ये है कि जो यज्ञ इत्यादि कार्य प्रातःकाल किया वह अपनी संस्कृति का नाम रखने के लिए नहीं बल्कि समाज में ये दिखावा करने के लिए किया कि देखो फलां व्यक्ति कितना अच्छा है जो जन्मदिवस जैसे सुअवसरों पर यज्ञ कर्म कराता है गरीबों और भीखमंगों को भोजन कराता है। शाम को जो पार्टी मनाता है वह भी कहीं न कहीं समाज के डर से मनाता है कि लोग क्या कहेंगे आज अगर केक कटवाकर, मोमबत्ती बुझाकर बर्थ डे पार्टी नही मनाई। वह समझता है ऐसा न करने पर लोग उसे गँवार, फूहड़ समझेंगे।

हमें यह विचार करना चाहिए कि हम अपने बच्चों के जहन में किस संस्कृति का बीज बो रहे हैं। हम उसे अपनी संस्कृति का सम्मान करना सिखा रहे हैं तो ये सरासर झूठ है, फरेब है। क्योंकि एक म्यान में दो तलवार कभी नहीं रह सकती। फिर पाश्चात्य संस्कृति तो हमारी वैदिक संस्कृति से सर्वथा विपरीत है। हमारी संस्कृति वो महान् संस्कृति है जिस पर चलकर राम–कृष्ण आदि महापुरुषों का जीवन चरित्र इतना ऊँचा उठ गया कि सम्पूर्ण विश्व उनको नमन करता है व उन्हें भारतीय संस्कृति का प्राण मानते हैं। भारत को आध्यात्मिकता के कारण विश्वगुरू और सोने की चिड़िया आदि कहा जाता है। हमारे यहाँ अष्टांग योग के द्वारा बड़े–2 ऋषि–महर्षियों ने अपनी जन्मभूमि भारत (आर्यावर्त) को गौरवान्वित किया। पहले गुरुकुल प्रणाली हमारे यहाँ शिक्षा पद्धति के रूप में प्रचलित थी, जहाँ आर्थिक जीवकोपार्जन के साधन सिखाने के साथ–2 आध्यात्मिक शिक्षा से बच्चों को संस्कारित किया जाता था। अष्टांग योग के प्रथम अंग यम के पाँच अंगों में सर्वप्रथम 'अहिंसा' का पालन करना सिखाया जाता है। शुरू से ही बालकों में हृदय में पशु–पक्षियों आदि प्राणीमात्र को प्यार करना सिखाया जाता है। महाराज भरत जिसके नाम पर देश का 'भारत' पड़ा था इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं। वह शेरों के साथ खेलते थे। जरा विचार करें कि यदि आप अपनी संस्कृति का सम्मान करना बच्चों को सिखा रहे हैं तो फिर जो ये केक की संस्कृति है ये क्या है? केक को अण्डे से तैयार किया जाता है जिसके प्रयोग से अनजाने में ही सही कहीं न कहीं हम अपने बच्चों के अन्दर हिंसा का बीजारोपण कर रहे हैं। सब उल्टा हो रहा है। हमारा देश अहिंसा प्रेमी देश है हमें जन्म से प्रेम करने का पवित्र संदेश दिया जाता है। लेकिन आज उसी धरा पर, पवित्र संदेशवाहक देश में अण्डा संस्कृति ने अपने पाँव पसार लिए हैं। मुर्गी के बच्चे की माँ के गर्भ पर सरेआम डकैती डलती है जो केक, आमलेट आदि के रूप में हमारी भावी पीढ़ी को हिंसक बना रहीं है फिर हम कहते हैं कि आज किसी को किसी से प्यार नहीं है। इसी देश में पहले मुसाफिरों तक को लोग अपने घरों में पनाह देते थे, आज क्या हो गया, क्यों लोग एक–दूसरे पर भरोसा नहीं करते? कभी सोचा है? यह सिर्फ हमारे पालन की जा रही पाश्चात्य परम्परा का ही दुष्परिणाम है जिसके लिए हम जिम्मेदार हैं।

पाश्चात्य संस्कृति की नकल करने वाले लोग यह भी विचार नहीं करते कि हमारी भारतीय संस्कृति में दीपक जलाया जाता है, बुझाया नहीं जाता। क्योंकि दीपक जलाना मानो ज्ञान का प्रकाश करना है वह सूर्य का प्रतीक है संसार में जैसे सूर्य के उदय होते ही सम्पूर्ण अंधकार का नाश होता है ठीक ऐसे ही इसका प्रतीक रूप दीपक जलाकर हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे बच्चों के जीवन में जो अज्ञान रूपी अंधकार है उसका नाश होकर ज्ञान का प्रकाश हो ताकि उनकी चहुंओर प्रसिद्धि हो। यहाँ आज भी दीपावली के दिन खुशियों के दीप जलाए जाते हैं बुझाए नहीं जाते और ये अपने बच्चों के जन्मदिवस की खुशी में केक काटते हैं और केक पर मोमबत्ती लगाकर उसे जलाते तो हैं पर तुरंत फूँ–फूँ करके बुझा भी देते हैं। मेरा मानना है कि मोमबत्ती का बुझाना मानो अंधकार फैलाने की ओर संकेत करना है। इसके अलावा मोमबत्ती बुझाते समय बच्चे के मुँह से फूंक के साथ केक पर थूक गिरने के बाद वही थूक मिश्रित केक उपस्थित जनों को खिलाया जाता है। हमें यह विचार करना चाहिए कि इन सब पेयों की बजाए यदि नींबू शहद पानी, रूहआफ़ज़ा, बादाम की ठण्डाई, दूध पिलाया जाए या दूध की कच्ची लस्सी आदि हमारे पास बहुत सारे विकल्प हैं जिनके पीने से पीने वालों को उससे फायदा ही होगा नुकसान नहीं प्रयोग में लाये जा रहे अन्य पेयों का हमारे हृदय, लीवर, फेफड़ों व हड्डियों पर घातक प्रभाव पड़ता है। पेप्सी इत्यादि में तो एक भी ऐसा पदार्थ नहीं है जो हमारे शरीर को नुकसान न पहुँचाता हो। फिर ये गरीब देशों के पेय हमारे देश में बेचकर वे आज मालामाल हो रहे हैं। लाखों लीटर पानी भी हमारे देश का ही इस्तेमाल करते हैं उसमें कीट–नाशक (जैसे लिंडेन, डी. डी. टी., मेलाथिऑन, क्लोरपाइरीफॉस आदि), तेजाब (जैसे कार्बोलिक एसिड, एरिथारबिक एसिड व बेंजोइक एसिड नामक तेजाब) एवं जहरीले रसायन (जैसे आर्सेनिक, कैडियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पौटेशियम सोरबेट, मिथाईल बेंजोएट और ब्रोमिनेटेड वेजिटेबल ऑयल आदि) डालकर ही हमें बेचते हैं।

एक रिसर्च के अनुसार कोल्डड्रिंक में फोस्फोरिक एडिक नामक तेजाब होता है, जो शरीर में सबसे कठोर अंग जैसे दाँत को भी गला देता है। इस पेप्सी या कोक के अंदर यदि दाँत डालकर 10–15 दिन रहने दिया जाए तो उसका नामोनिशान भी नहीं रहता, गल जाता है। 3–4 रुपये तैयार होने वाले ये पेय हमें 15–20 रुपये में प्राप्त होते हैं। सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि देश के जिन प्रदेशों में सरकार पीने का पानी भी नहीं पहुँचा पा रही है वहाँ भी ये विदेशी कम्पनियाँ टैंक के टैंक भरकर पैप्सी व कोक पहुँचा रही है। ठण्डे के नाम पर जहर बेचने में जुटी हुई है। शरीर का सिद्धान्त काहता है कि कार्बनडाई ऑक्साइड को बाहर फैंको। लेकिन जो कार्बनडाई आक्साइड हम सांस के द्वारा बाहर छोड़ते हैं वही कोक व पेप्सी आदि के माध्यम से अन्दर ले जाते हैं। हमें यह विचार करना चाहिए कि हमारे देश में आज भी बड़ों द्वारा आशीर्वाद दिया जाता है– *'दूधों नहाओं, पूतों फलों'* और इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे देश में घर–2 में सैकड़ों गऊओं का पालन होता था, जिससे इतना दूध यहाँ होता था कि उपरोक्त वचन आशीष के रूप में कहे जाने लगे।

श्री एन. एस. चौधरी सिनियर मैनेजर फाईनेंस आई. ओ. सी. एल. रिफाईनरी (पानीपत) के अनुसार एक पेड़ 50 वर्ष के अपने जीवन काल में 3.50 लाख रुपये की ऑक्सीजन देता है। 4.50 लाख रुपये का पानी रिसाईकिल देता है। 3.75 लाख रुपये का भूमि संरक्षण करता है। 7.50 लाख रुपये का वायु प्रदूषण रोकता है। 3.75 लाख रुपये का पशु–पक्षियों का भोजन व आवास प्रदान करता है। अर्थात् कुल मिलाकर 23 लाख रुपये का लाभ अपने जीवनकाल में मानव को देता है। फिर भी हम जागरूक नहीं हैं कि भारत सरकार विदेशी कम्पनियों को सिगरेट बनाने के लिए हमारे देश में पेड़ काटने का लाइसेंस देती हैं, पब्लिक (जन–साधारण) को पेड़ काटने की इजाजत नहीं है पर लगाने को उकसाते हैं और सरकार खुद कटवाती हैं वो भी विदेशी कम्पनियों को लाभान्वित करने के लिए। स्व. श्री राजीव दीक्षित के अनुसार अकेली अमेरिका की आई.टी.सी. कम्पनी भारत में 90 अरब सिगरेट बनाती है और 90 अरब सिगरेट बनाने के लिए 1400 करोड़ पेट कट जाते हैं हर वर्ष और प्रत्येक पेड़ 10–15 लाख रुपये की ऑक्सीजन देता है इससे एक तो अरबों रुपयों की ऑक्सीजन खत्म हो जाती है दूसरा जब ये 90 अरब सिगरेट जलती हैं तो इनमें से 46 हजार मिट्रिक टन जहरीली गैसें (जैसे कार्बनआक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाई आक्साइड गैसे) जिससे भारतीय लोग (तन और धन) दोनों तरफ से लुट रहे हैं।

अतः संकल्प लें अपने बच्चों के जन्मदिवस पर यज्ञादि–कर्म करके पर्यावरण शुद्धि एवं बच्चे के स्वास्थ्य एवं आगन्तुकों को भी (परोक्ष रूप में स्वस्थ के लिए) स्वच्छ वायु आप प्रदान करेंगे। इससे हमारी संस्कृति की भी रक्षा होगी। इस पर गर्व करें न कि शर्मिन्दगी। जो लोग पाश्चात्य परम्परा का भी अनुकरण करते हैं। वे अपनी संस्कृति की गौरव गरिमा नहीं समझते इसलिए ऐसा करते हैं उनके लिए भी आप प्रेरणा के बनें और अपने बच्चों के लिए तो आपसे बड़ा शिक्षक और है ही नहीं। आज आवश्यकता भी है क्योंकि विदेशी प्रणाली से बच्चों को शिक्षा प्रदान की जा रही है, जिसके कारण हमारे बच्चे केवल अपनी आर्थिक जीविका (रोटी, कपड़ा व मकान) के आगे कुछ नहीं सोच पाते उनका अध्यात्म से अब कोई नाता नहीं रहा और हमें अपनी गृहस्थ रूपी संस्था में अपने बच्चों को अंधविश्वासों में न डालकर अध्यात्म से जोड़ना है ताकि उनका चहुँमुखी विकास हो न।

पाठकों से निवेदन है कि हम से कम अपने घर से शुरूआत करें। अपसंस्कृति छोड़कर दुनिया की सिरमौर अपनी सत्य सनातन वैदिक संस्कृति का अनुकरण करें।

ग्राम शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली–61
मो.: 9871644195

thearyasamaj.org

कर्मफल सिद्धान्त कुछ अनसुलझे प्रश्न, का समाधान

● टीकाराम आर्य

मान्य पाठक महोदय जी आर्य जगत पत्रक दिनांक 28 सितम्बर 2014 से 4 अक्टुबर 2014, अंक 126, पृ० संख्या 4 में मान्य अभिमन्यु कुमार खुल्लर जी, 22 जीवा जी गंज लश्कर ग्वालीयर – 484001 (म.प्र.) सम्पर्क सूत्र, 07512425931 का कर्मफल सिद्धान्त कुछ अनसुलझे प्रश्न, शीर्षक से लेख प्रकाशित हुआ है। उक्त लेख में लेखक महोदय ने सम्पूर्ण आर्य सन्यासीगण तथा विद्वानों को चुनौती के रूप में अपने प्रश्न का समाधान करने हेतु आग्रह किया है। लेख का आंशिक भाग निम्न प्रकार है।

कश्मीर की महाप्रलय ने प्रकृति की विनाशकारी शक्ति का विकराल स्वरूप दिखाया है। कश्मीर समतल प्रदेश नहीं है यदि वहां बाढ़ का पानी बीस फुट की ऊंचाई पर बह रहा है तो कल्पना कीजिए वहाँ बचा ही क्या होगा? जन–धन, पशुधन, मकान–पेड़ सब को बहा ले गया प्रवाह।

बताइये इस भारी मानव विनाश की संगति कर्म फल सिद्धान्त में कैसे बिठाएँगे? यही बात संदर्भित लेख में उत्तराखण्ड जल प्रलय सुनामी आपदाओं के विषय में मैंने उठाई थी। उत्तराखण्ड में लाशें अभी कुछ समय पूर्व तक निकाली जा रही थीं ये सब मृत्यु ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था के अन्तर्गत हुई। मुझे मानने में बहुत संकोच है आपत्ति है।

जल प्रलय के पश्चात् प्राकृतिक आपदाओं में वायरस–रोगाणु जन्य बिमारियों से हजारों मानव काल–कवलित हो जाते हैं। पहले मलेरिया फिर टी.वी. (तपेदिक) और अब डेंगू मे ननजाइटिस एन, सेफिलाईट्स, चिकनगुनिया, कैंसर और अभी पिछले एक दो महीनों से एबलो महामारी–बीमारी का नाम सुना जा रहा है। मानव द्वारा इतनी पीड़ा यातना को भी क्या कर्मफल सिद्धान्त की परिधि में लाया जा सकता है? क्या इनके द्वारा ईश्वर पीड़ा व मृत्यु देने के नये–नये औजारों का निर्माण करता है।

आर्य सन्यासियों व विद्वानों से आग्रह है कि इस लेख का पता चलने पर अपने विचारों से आर्य जनता को लाभान्वित कराएँ। मौन न रहें मैं निवेदन कर रहा हूँ कि आर्य जगत व इतर को पत्र पत्रिकाओं के सम्पादकों से नाचीज लेखक को पर्याप्त प्रोत्साहन मिल रहा है यह लेख विद्वानों व सन्यासियों से समाधान की अपेक्षा रखता है।

समाधान :– आदरणीय खुल्लर जी तथा पाठक महोदय जी लेख के आंशिक भाग को पढ़ने से विदित होता है कि खुल्लर महोदय कि मान्यता है कि उपरोक्त वर्णित आपदाओं को ईश्वरीय न्याय एवं कर्मफल सिद्धान्त न माना जाये अपितु अन्य कारण माना जाना चाहिए था। जिससे उनकी मानसिकता का पता चल जाता।

देखिये संसार का एक दृढ़ एवं सुनिश्चित सिद्धान्त है कि बिना कारण व बिना कर्त्ता के कोई कार्य नहीं होता जैसा कि महर्षि कणाद जी ने अपने वैशेषिक दर्शन 1.2.1 में वर्णन किया है। कारणाभावात् कार्याभावः अर्थात् अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती। कश्मीर तथा उत्तराखण्ड में घटनायें अवश्य ही हुई, जिस का प्रत्यक्ष प्रमाण है इन घटनाओं का कारण क्या है यह विचारणीय प्रश्न है। सांख्य दर्शन प्रथम अध्याय पृ० 1 सू० 1 में वर्णन आया है कि अथ त्रिविध दुखात्यन्त–निवृतिरत्यन्त पुरूषार्थ अर्थात् तीन प्रकार के दुःखों का अत्यन्ताभाव हो जाना प्राणी मात्र का मुख्य उद्देश्य है। तीन प्रकार के कौन से दुःख हैं आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक। आधिदैविक दुःख किसे कहते हैं। जो दुःख दैविक शक्तियों द्वारा अर्थात् अग्नि वायु या जल के न्यूनाधिक्य से उपस्थित हों उनको आधिदैविक कहते हैं।

कश्मीर तथा उत्तराखण्ड में जो विनाश हुआ वह अत्यधिक जल प्रवाह से क्या यह जल प्रवाह अपने आप हुआ, उत्तर नहीं। क्योंकि जड़ वस्तु स्वयं कोई क्रिया नहीं कर सकती, क्योंकि जड़ पदार्थों में तब कोई क्रिया होना सम्भव है जब तक कोई चेतन = ज्ञानवान सत्ता सहायक न हो। तब प्रश्नहुआ कि इस तहा प्रलय रूपी विनाशकारी जल प्रवाह में कौन सहायक हुआ। उत्तर, ईश्वर ने यह विनाशकारी महाजल प्रवाह जीवों के जन्म जन्मान्तरों के कर्मों के पाप दन्ड न्याय व्यवस्था से एवं कर्मफल सिद्धान्तनुसार दिया। यह कैसे सम्भव है। उत्तर इस प्रकार है। ऋग्वेद का प्रसिद्ध मंत्र है।

द्वा सुपर्शा सजुया सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वादूत्यनत्रन्नन्यो अभिचाकशीति ऋ०म० 1 मं० 20 सूक्त 134 पृ० संख्या 832 ।।

भावार्थ – इस मंत्र में रूप है। जीव परमात्मा और तगज का कारण तीन पदार्थ अनादि और नित्य है। जीव और ईश परमात्मा यथा क्रम से अल्य अन्नत चेतन– विज्ञानवन व्याण्य व्यापकभाव से संयुक्त और मित्र के समान वर्तमान हैं। वैसे ही जिस अव्यक्त परमाणुरूप कारण से कार्व्य रूप जगत होता है वह भी अनादि और नित्य है। समस्त जीव पाप पुण्यात्मक कार्यो को करके उनके फलों को भोगते हैं और ईश्वर एक सब ओर से व्यापत होता हुआ न्याय से पाप पुण्य के फल को देने से न्यायाधीश के समान देखता है।

उपरोक्त वेद मन्त्र के भावार्थ से स्पष्ट है कि ईश्वर, जीव व प्रकृति = कारण अनादि में, जीव अल्पज्ञान वाला, प्रकृति जड़ = अज्ञानी होने के कारण महाविनाशकारी घटित घटना में सहायक होने में असमर्थ हैं और न ही जीवों के घटित घटना में पीड़ितों के = पीड़ित पक्ष के पूर्व किये पाप कर्मो का लेश मात्र भी ज्ञान है जिससे वह न्याय के आधार पर उनको यथोचित दन्ड दे सके। इस प्रकार तीनो अनादि सत्ताओं में मात्र ईश्वर ही शेष रहा जो सर्वज्ञ, न्यायकारी होने पर इस प्रकार की महाविनाशकारी घटनाओं को करने में पूर्ण समर्थ है। चौथा पदार्थ संसार में है ही नहीं जो इस प्रकार की घटओं को कर सके।

इस प्रकार से सिद्ध हुआ कि मात्र ईश्वर ही द्वारा इस प्रकार की घटनायें घटती हैं। अन्य कोई कारण नहीं है। यदि है तो मान्य खुल्लर जी तथा उन के कोई भी समर्थक प्रस्तुत लेख पत्र पर आपत्ति करने में पूर्ण स्वतन्त्र हैं।

इसी प्रकार की आपत्तिशंका का वर्णन स्वामी विवेकानन्द जी ने अपनी पुस्तक, उत्कृष्ठ शंका समाधान क्रम सं० 3–पृष्ठ संख्या 32–संस्करण–2 में किया है जिस का वर्णन करना प्रकरणानुसार उचित समझता हूँ। जो निम्न प्रकार है।

शंका– सृष्टि (जगत) में सभी जीव परमात्मा के लिए सन्तानवत् हैं तो परमात्मा प्राकृतिक प्रकोप के द्वारा क्या दर्शाना चाहता है – दयालुता या न्यायकारिता? कई जीव पृथ्वी पर पैर रखते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसा क्यों?

समाधान :– प्रश्नकर्त्ता ने पूछा है कि इससे ईश्वर अपनी दयालुता दिखाना चाहता है और कहीं यह भी हो सकता है कि भगवान ने पहले ही कह रखा था कि मै सृष्टि बनाउँगा और इसमे दुर्घटनाएँ होंगी आप का काम है दुर्घटना से बच के चलना।

एक इंजिनियर ने कार बना कर उस से सम्बन्धित पूरा विवरण बुकलेट में छाप कर खरीददार को दे दिया खरिददार को बता दियाकि पहले बुकलेट पढ़नी है इसको समझ के फिर कार का इस्तेमाल करना है।

बुकलेट में पहले से ही यह सूचना दे रखी है कि जब कार का इन्जन स्टार्ट होगा तो इन्जन में गर्मि बढ़ेगी। और जब गर्मि बढ़ेगी तो उसके रेडिएटर में कुलेन्ट डाल कर रखना, उस का इन्जन ठन्डा रखना और मीटर पर देखते रहना कि कितना तापमान है। पेट्रोल इन्जन में अगर सौ डिग्रर से ऊपर तापमान गया तो इन्जन में आग लगेगी।

कार चलाने वाला व्यक्ति कूलेन्ट तो डाले नहीं रेडिएटर को चेक करे नहीं मीटर देखे नहीं कि तापमान कितना बढ़ रहा है इस अवस्था में कार में आग लगती है तो इस में किस का दोष है? यह ड्राईवर और कस्टमर का दोष है कार बनाने वाले इंजिनियर का दोष तो नहीं है।

इसी प्रकार से भगवान ने जब यह सृष्टि बनाई तो उसने कहा इस सृष्टि बनाई तो उसने कहा इस सृष्टि के अन्दर भुकम्प, तुफान, आँधी, सुनामी, टोरनेडो जैसी कई प्राकृतिक विपदाएं आने की सम्भावना है। आप का काम है सावधानों से चलते रहना। पता लगाना हमारा काम है कि कहां तुफान आ सकता है कहां भुकंप आने वाला है कहां बाढ़ की स्थिति बन सकती है फिर उससे बच के रहना। अगर हम ध्यान न दें तो किस की गलती। हमारी या ईश्वर की? हमारी गलती इसलिए ईश्वर पर दोष नहीं आता है।

हमारा काम है दुर्घटनाओं से बचना। जब सड़क पर चलते हैं तो मोटर गाड़ी से बचकर चलते हैं ऐसे ही संसार में रहते है तो प्राकृतिक दुर्घटनाओं से बचकर चलाना भी हमारा ही काम है।

भूकंप के लिए भी पता लगाओ यह कब आयेगा....... नहीं सोएगें। इस प्रकार से अपनी रक्षा करना हमारा काम है भगवान ने इस लिए तो बुद्धि दी है कि सावधानी से चलो।.........। इस तरह से भी मान्य खुल्लर जी की आपत्ति का समाधान हो जाता है।

मुझे अल्पमति लेखक ने मान्य खुल्लर महोदय जी की आपत्ति का समाधान किया है मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि खुल्लर जी तथा उनके समर्थक पूर्ण रूप से अपनी आपत्ति का समाधान कान कर सन्तुरूट होंगे। इत्योम शम

डि.मौली प० – महीउद्दीनपुर–जनपद
मेरठ, उ० प्र०–150105, आर्यव्रत
सम्पर्क सूत्र – 9182043174

thearyasamaj.org

यज्ञ

● डॉ. देवराज गुप्ता

यज्ञ के तीन प्रमुख अर्थ हैं:–
1 देवपूजा 2 संगतिकरण
3 दान

जो कोई भी कुछ देता है – सुख देता है–आराम देता है, ज्ञान देता है वह देव है। उसका आदर सत्कार करना देव पूजन है। सही उपयोग करना देव पूजा है।

यज्ञ के लिए मैंने सामग्री ले ली, यज्ञ पात्र ले लिए, यज्ञकुण्ड ले लिया, घृत ले लिया, मैं इनका सदुपयोग भी समझता हूँ, परन्तु इतने मात्र से यज्ञ नहीं हो जाएगा।

यज्ञ करने से पहले उन वस्तुओं का संगतिकरण नितान्त आवश्यक है। संगतिकरण से पहले इन सभी चीजों के गुण दोषों को परख लेना होगा। यज्ञ कर तीसरा अर्थ है दान–देने वाले की भावना जितनी पवित्र देने में होती है, संगतिकरण उतना ही सुदृढ़ होता है।

शास्त्रकारों ने यज्ञ सामग्री, समिधाओं और घी को अच्छी प्रकार शोधकर परख लेने की बात कही है। यदि बिना शोधे उनका मेल कराने का प्रयत्न किया जाएगा तो परिणाम अच्छा नहीं होगा। ऋषिवर दयानन्द ने हवन द्रव्यों के विषय में बड़े प्यारे शब्दों में कुछ बातें लिखीं हैं। समिधा की चर्चा करते हुए वे लिखते हैं–

''समिधा कीड़ा लगी मलिन देशोत्पन्न और अपवित्र पदार्थ आदि से दूषित न हो, अच्छे प्रकार देख लें। होम के द्रव्यों को यथावत शुद्ध अवश्य कर लेना चाहिए अर्थात शोध छान कर देख भाल लें। घी को तपा लें और उसको अच्छी प्रकार देख लें''

ऋषिवर पूरी तसल्ली करने की बात कहते हैं

समाज एक यज्ञ है। परिवार एक यज्ञ है और हम उस यज्ञ में अर्पित होने वाली सामग्री हैं समिधाएँ है। यदि छोटा सा अग्निहोत्र जो प्रातः या सांयकाल किया जाता है, उसमें यज्ञ कुण्ड में घुन लगी समिधा नहीं डाली जानी चाहिए। कच्ची नहीं डाली जानी चाहिए अपवित्र नहीं डाली जानी चाहिए तो क्या परिवार के, समाज के या संस्था के यज्ञ में घुन लगी समिधा अर्पित करनी चाहिए। अगर घी को तपाकर शोधकर अच्छी तरह देखकर यज्ञ में आहुति देनी चाहिए। तो क्या परिवार का हिस्सा बनने से पूर्व मुझे अच्छी तरह अपने आपको परखना नहीं चाहिए? शोधना नहीं चाहिए?

ऋषि दयानन्द के आने से पूर्व बाल विवाह होते थे। ऋषि दयानन्द ने इनका विरोध किया। बाल विवाह यज्ञ में कच्ची समिधा अर्पित करना था। वृद्ध विवाह होते थे।

उनका भी विरोध किया। ये धुन लगी समिघा थीं और विवाह यज्ञ में घुन लगी समिधा नहीं डाली जा सकती।

यदि हम यज्ञ करना चाहते हैं अर्थात यज्ञमयी भावना से किसी भी काम को करना चाहते हैं तो हमको स्वयं को समिधा के रूप में अर्पित करने से पहले अपने अन्दर झाँक कर अपने गुण और दोष देखने पड़ेंगे। यदि मेरे अन्दर अवगुण हैं तो अर्पित कर देने के पश्चात् दुर्गन्ध पैदा होगी। सुगन्धियुक्त वातावरण नहीं बनेगा।

याद आते हैं वे वीर बाँकुरे जिन्होंने देश के स्वतन्त्रता संग्राम रूपी यज्ञ में अपने शरीर को समिधा बना कर होम कर दिया–

सरदार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव तीनों साथी सर्दी में एक अंगीठी ताप रहे हैं। चर्चा चल रही है कि जिसे अंग्रेज पकड़ लेता है उस पर बड़े अत्याचार करता है। राजगुरू अपनी छाती के बटन खोलते हुए और लाल सँडासी में अपना मांस पकड़ कर खींच डालते हैं। भगत सिंह ने हाथ पकड़ लिया, बोले क्या हो गया है तुम्हें? राजगुरू ने कहा कुछ नहीं–स्वाधीनता की लड़ाई लड़ना चाहता हूँ और तुम कहते हो अंग्रेज बड़े अत्याचार करता है इससे ज्यादा क्या करेगा। मेरे जिस्म की चमड़ी गर्म चिमटों से जलाएगा यदि मैंने उफ की तो मैं इस यज्ञ में इस स्वतन्त्रता संग्राम के यज्ञ में अर्पित होने वाली समिधा नहीं हूँ।

रामप्रसाद बिस्मल को जिस दिन फाँसी होनी थी, उसका वजन बढ़ गया था। अंग्रेज जेलर ने पूछा राम प्रसाद यह ट्रेनिंग तुमने कहाँ से ली है–कौन है तम्हारा गुरू! राम प्रसाद गर्व से कहता है– जानना चाहते हो? मेरी वह संस्था जहाँ मैंने ट्रेनिंग ली है, आर्य समाज है, जहाँ मैंने अपने आपको तपाकर शोधकर इस तरह से बनाया है और मेरा गुरू है वह देवऋर्षि दयानन्द।

यह तो बात हुई यज्ञ सामग्री और समिधा की, घी की परन्तु यज्ञ की पूर्णता के लिए यज्ञ का यजमान होता है। यजमान वह व्यक्ति है जो कोई पवित्र काम करने का संकल्प लेता है।

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के आधार पर यज्ञ रचा भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का। गांधी इस यज्ञ के यजमान बने। यजमान कहता है ''अयं त इध्म आत्मा जातवेदः''। हे अग्ने। तेरे लिए सब से पहला ईंधन अयं आत्मा' यह मेरी आत्मा है–मै स्वयं हूँ। इस यज्ञ में महात्मा गांधी ने पहली आहुति दी फिर एक के बाद एक अनेक वीरों ने अपनी आहुति दी।

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर
लोग मिलते गए कारवाँ बनता गया।

चाहे कितना ही दृढ़ संकल्प व्यक्ति हो वह अकेला यज्ञ पूरा नहीं कर सकता। यजमान प्रातः काल अग्निहोत्र करता है, तो वेदी के चारों ओर कुछ लोगों को बुलाकर बैठाता है। जब महात्मा गान्धी ने स्वतत्रता संग्राम प्रारंभ किया तो पुकारा भारत के लोगों को, कहा–आओ मेरा साथ दो ताकि हम देश को आजाद करा सकें। नेता जी सुभाषचन्द बोस ने इस भारत भू से दूर खड़े होकर कहा–तुम अपना खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा। वह देखो लाल किले की दीवार–वह मेरे यज्ञ का यज्ञकुण्ड है। वह तुम्हे आहूत होने के लिए पुकारती है।

और यजमान जब यज्ञ के लिए औरों को पुकारता है तो बराबर का हिस्सेदार बनाने के लिए हम को ई संस्था चलाते हैं तो उसमें प्रधान या मन्त्री का हिस्सा जयादा नहीं होता, सभी सदस्य बराबर के भागीदार होते हैं।

यजमान अग्नि प्रज्वलित करता है–यह यज्ञाग्नि संकल्प का प्रतीक है–अग्नि जितनी अधिक प्रज्वलित होगी यज्ञ उतना ही अच्छी प्रकार से होगा। इसी प्रकार व्यक्ति का संकल्प–इरादा जितना पक्का होगा–जीवन में सोचा हुआ कार्य उतना ही सफल होगा।

मैंने पश्चिमी बर्लिन 1979 में एक लौ जलती हुई देखी जैसी हमारे दिल्ली में इण्डिया गेट पर शहीदों के स्मारक का प्रतीक है–मैंने सोचा इनका भी ऐसा ही यह स्मारक होगा। मैंने पूछा यह लौ कैसी है तो उन्होंने कहा यह हमारे संकल्प का प्रतीक है। हमारा संकल्प है कि एक दिन पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन को एक कर के रहेंगे और दुनिया ने देखा–उनका वह संकल्प पूरा हुआ–वह मजबूत दीवार जिसने बर्लिन को दो हिस्सों में बाँट रखा था–गिरी और पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी फिर से एक देश हो गया।

यज्ञ में एक ब्रह्मा भी होता है।

ब्रह्मा जी अपने घर से सामग्री लेकर नहीं आए, यज्ञ शाला को धोया नहीं, आसन को बिछाया नहीं। वह आहुति भी नहीं दे रहे, तो भी उनको सर्वाधिक सम्मान दिया जाता है, उनके जिम्मे केवल एक काम है–वे बड़ी तीखी नजर से यज्ञ पर बैठे प्रत्येक व्यक्ति को देख रहे हैं। हर कोई अपना काम ठीक कर रहा है। मन्त्र पाठ ठीक हो रहा है? सही समय पर आहुति दी जा रही है।

मेरे गांव का जीवन भी एक सात्विक यज्ञ था जहाँ कुछ गलियाँ आकर मिलती थीं वहाँ एक चौपाल थी। वहाँ चारपाई डाले एक बूढ़ा बुजुर्ग एक लाठी पास रखे बैठा रहता था। जब मैं गाँव के स्कूल में पढ़ता था इसका रहस्य समझ नही पाया। क्यों बैठा होता है बाबा? यह बुजुर्ग एक–एक बात देखता था। कोई बच्ची चली जा रही है, जैसे चलना चाहिए कैसे नही चल रही, तो वह उसे झिड़क देता था। कोई ऐसा वैसा आदमी गाँव में घुसता था तो वह उसे रोकता था पूछता था। गली में कोई बच्चा खेल रहा है अगर वह गाली–गलौच करे तो उसे थप्पड़ लगाता था–रोकता था। एक बार मुझे भी थप्पड़ लगा था मैं रोता हुआ माँ के पास गया और कहा कि गली में जो बाबा बैठा है उसने मुझे थप्पड़ मारा। मां ने मुझे एक थप्पड़ और मारा। तूने किसी को गाली दी होगी नहीं तो वे गाँव के सबसे बाइज्जत आदमी हैं तुझे क्यों मारते? गाँव के जीवन का यज्ञ हो रहा था और उसका ब्रह्मा वह बुजुर्ग।

यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ शेष होता है।

इसका क्या अर्थ है। मैं कोई भी काम करूँ, व्यापार करूँ, उद्योग चलाऊँ, सर्विस करूँ उसको यज्ञमयी भावना से करूँ–अपनी, अपने परिवार की आवश्यकताओं के पश्चात कुछ ऐसा अवश्य बचाऊँ जो और के काम के लिए हो अर्थात दान अवश्य करूँ। वेद प्रचार के लिए, निर्धन बच्चों की पढ़ाई के लिए, जरूरतमन्दों के लिए, इदन्नमम का अर्थ यही है यह सब मेरा नहीं है। समाज से ही मैंने कमाया है। इसमें समाज की पूरी भागीदारी है।

यज्ञ करते समय बार–बार मन्त्र पाठ करते हुए कहते हैं–स्वाहा

स्वामी समर्पणानन्द जी ने इसका बड़ा प्यारा अर्थ किया हैस्वामी जी इसका अर्थ करते हैं– बढ़िया हुआ–ठीक हुआ। इसी तरह जीवन में यदि हर कर्म करते हुए यह आवाज निकलती है। –ठीक हुआ तो यज्ञ है अन्यथा नहीं।

अपने जीवन में यज्ञ किया था ऋषि दयानन्द ने –जब उसकी पूर्ण आहुति देने लगे, अजमेर में, –रोम–रोम से विष फूट कर निकल रहा है बहुत पीड़ा है, परन्तु चेहरे पर मधुर मुस्कान है– मुखारविन्द से निकलता है–अहा तू ने अच्छी लीला की–तेरी इच्छा पूर्ण हो। ऋषि का रोम–रोम स्वाहा कह रहा है।

जब हम पूर्णाहुति देते हैं तो 'ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' बोलते हैं।

स्वामी समर्पणानन्द जी ने इसका बड़ा प्यारा अर्थ किया है। कोई कार्य ठीक हुआ तब जानो जब वह पूर्ण हो जाए बीच में छोटी–मोटी सफलता मिल जाए, तो आराम से नहीं बैठना–अभी रास्ता लम्बा है।

तो हम शुरु हुए थे यज्ञ के तीन अर्थो से–

अपने से बड़ों को देव समान समझ कर उनका आदर करें, बराबर वालो से संगतिकरण के द्वारा अच्छी बातें ग्रहण करें और छोटों को प्यार और जरूरतमन्दों के लिए दान करें। यही सर्वोत्तम यज्ञ है इसी के द्वारा विश्व का कल्याण सम्भव है। विश्व शान्ति सम्भव है।

अग्निहोत्र इस विशाल यज्ञ का एक मुख्य अंग है और प्रतीक है। अग्निहोत्र में जो मन्त्र हैं वे समर्पण की त्याग और बलिदान की भावना मानव हृदय में उत्पन्न करते हैं।

स्वामी दयानन्द मार्ग
अम्बाला शहर
हरियाणा

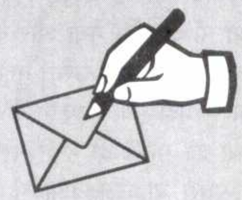

पत्र/कविता

'श्रवण कुमार की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह?' एक वैचारिक पत्र

23 फरवरी 2014 के 'आर्य जगत' में पृ. 8 पर प्रकाशित श्री कृष्ण मोहन जी गोयल का लेख 'आधुनिक युग में श्रवण कुमार की प्रासंगिकता' पढ़ा। पढ़कर ऐसा लगा जैसे लेखक महोदय का ध्यान विषय के मूल पर कम तुलसी के गुणगान पर अधिक है। वह भी आधा अधूरा, जैसे सुना हो। पढ़ा न हो।

इस लेख में 'शीर्षक' की पुष्टि में कई उदाहरणं प्रस्तुत किये हैं, परन्तु शबरी के द्वारा श्री राम को झूठे बेर खिलाना तथा गिलहरी के द्वारा समुद्र के पुल बंधवाने में श्री राम की सहायता करना ये दो ही तथ्य (जिनका कोई आधार नहीं है।) प्रस्तुत किये हैं। हितोपदेश तथा पंचतंत्र का श्रवण कुमार की प्रासंगिकता से कुछ लेना देना नहीं है। साथ ही उड़ीसा राज्य के एक सपूत का उदाहरण प्रस्तुत करके फिर राम और लक्ष्मण के 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' पर आ गये। इसके बाद माता–पिता तथा गुरु का उदाहरण देकर लेख समाप्त।

अब लेख में महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर दृष्टि डालिये। कथा श्रवण कुमार की और उद्धरण राम के द्वारा शबरी के झूठे बेर खाने की। कथा श्रवण कुमार की और उद्धरण राम के द्वारा पुल बँधवाने में गिलहरी की सहायता करने की। किसी भी गंभीर विचारक के लिये ये चुटकले संशय रूपी विहग को विचार वृक्ष से उड़ाने के बजाय और अधिक चिपका देते हैं। लगता है लेखक तुलसी की इस चौपाई से कुछ ज्यादा, ही प्रभावित हैं। 'राम कथा सुन्दर कर तारी–संशय विहग उड़ावनहारी।' इस चौपाई से संशय विहग फुर्र से उड़ जायेगा।

विद्वान लेखक जी ने तुलसी की झोली से शबरी और गिलहरी के जादुई शोशे तो पाठकों के सामने प्रस्तुत कर दिये। पर क्या लेखक महोदय ने तुलसी या बाल्मीकि के किसी ग्रन्थ में देखा भी है, या फिर सुनी–सुनाई बात को "आर्य जगत" में परोस दिया है? कृपया प्रकाश डालें।

अब सुधी पाठकगण तुलसी के मानस का वह अंश भी देख लें, जिसके द्वारा निर्दोष शबरी को व्यर्थ ही लांछित किया जाता है। जहाँ तक मैंने तुलसी के 'मानस' को खंगाला है, 'राम चरित मानस' में समुद्र पर पुल बाँधने की प्रक्रिया में – लंका काण्ड के षष्ठ सोपान में सोरठा संख्या 2–3 से लेकर लगभग 14–15 चौपाई तथा 3–4 दोहों में वानरों की सहायता से नल–नील के द्वारा पुल–निर्माण तथा वानर–रीछों की उछल कूद है, पर गिलहरी तो वहाँ कहीं दिखाई नहीं दी।

बाल्मीकि रामायण में भी 'युद्ध काण्ड' के 22 वें सर्ग में कुल 89 श्लोक हैं, जिनमें लगभग 40 श्लोक पुल–निर्माण से ही सम्बन्धित हैं, परन्तु इनमें कहीं भी गिलहरी का नाम तो क्या उसकी छाया तक नहीं है। न जाने कब, कहाँ से, कैसे पुल–निर्माण में सहायता करने यह गिलहरी आ टपकी? क्या श्री गोपाल जी इसका कुछ अता–पता देंगे?

दूसरी बात जो लेखक महोदय ने अपने लेख में उद्धृत की है, 'शबरी के झूठे बेर श्री राम द्वारा खाने की।' उस पर भी विचार कर लें। वास्तव में न तो शबरी ही इतनी मूर्ख थी कि अपने पूज्य अतिथि को अपने झूठे बेर खाने को देती, और न श्री राम ही इतने हत बुद्धि थे, कि वे झूठे बेर खाते। तुलसी दास भी इतने अबोध नहीं थे, कि ऐसी बचकानी बात लिखते। निस्सन्देह भक्त और भगवान का सम्बन्ध अत्यन्त मधुर और निकटतापूर्ण होता है, पर वह खाने–पीने का नहीं श्रद्धा, भक्ति और प्रेम का होता है।

'तुलसी रचित' 'मानस' में शबरी का आतिथ्य वर्णन देखिये। अरण्य काण्ड का तृतीय सोपान। 40 वें दोहे के पश्चात् चौथी पाँचवी चौपाई तथा 41 वाँ दोहा:–

'सरसिज लोचन बाहु बिसाला–जटा मुकुट सिर, उर बन माला।
स्याम गौर सुन्दर दोऊ भाई–सबरी परत चरन लपटाई।।'

अर्थात् कमल के समान नेत्र, विशाल भुजायें, सिर पर जटाओं का मुकुट, तथा वक्षस्थल पर वन माला धारण किये हुए, गौर वर्ण तथा दूसरे श्याम वर्ण वाले दोनों भाइयों को देखकर शबरी उनके चरणों से लिपट गई।'

'प्रेम मगन मुख, वचन न आवा – पुनि–पुनि पद सरोज सिरवाना।
सादर जल लेई, चरण पखारे–पुनि सुन्दर आसन बैठारे।।'

अर्थात् वह (शबरी) प्रेम में मग्न हो गई। अतः (प्रेमवश) उसके मुख से वचन नहीं निकलें। उसने (शबरी ने) बार–बार दोनों (भाइयों) के चरण कमलों में सिर झुकाया, और आदर के साथ जल लेकर (दोनों के) चरण धोये। तत्पश्चात् दोनों को सुन्दर बासन पर बैठाया।।

दोहा (41) 'कन्द मूल फल सुरस अति, दिये राम बहु आन।
प्रेम सहित प्रभु खाये, बारम्बार बखान।।'

अर्थात् शबरी ने श्री राम को अत्यन्त मीठे कन्द, मूल और फल (खाने के लिये) लाकर दिये और श्री राम जी ने बड़े प्रेम के साथ (शबरी के आतिथ्य और फलों की मधुरता की) बार–बार प्रशंसा करते हुए वे फल खाये।

मान्य पाठक गण! देखिए यहाँ कहाँ हैं झूठे बेर खिलाती शबरी, और झूठे बेर खाते श्री राम? वैसे भी बेर नाम के फल का तो 'रामचरित मानस' तथा 'वाल्मीकि रामायण' में शायद ही कहीं नाम हो।

अब वाल्मीकि रामायण में भी दोनों भाइयों के शबरी के आश्रम में आगमन पर उस बन देवी (शबरी) के द्वारा फलों से स्वागत करना भी देख लीजिये। 'अरण्य काण्ड' के 74 वे सर्ग में 17 वें तथा 18 वें श्लोकों से स्पष्ट हो जायेगा:–

'एवमुक्ता महाभागैस्तदा ऽहं पुरूषर्षभ।
मयातु संचितं वन्यं विविधं पुरूषर्षभ।।'
तवार्थे पुरुष व्याघ्रः पम्पायास्तीरसम्भवम्।
एवमुक्तः स धर्मात्मा शबर्या शबरीमिदम्।।'

अर्थात् हे पुरुष श्रेष्ठ श्री राम! मैंने पम्पासर के किनारे उत्पन्न होने वाले नाना प्रकार के जंगली फल फूलों का (आपके लिये) संचय किया है। तब दोनों भाइयों ने उन फलों को प्रेम पूर्वक खाया।।'

यही है शबरी के झूठे बेरों का सच्चा इतिवृत्त और गिलहरी की काल्पनिक गाथा का वास्तविक चित्रण।इनमें श्रवण कुमार की प्रासंगिकता की वास्तविकता कहाँ है? आर्य विद्वान ऐसे कपोल कल्पित गपोड़ों से बचते ही रहें तो अच्छा है।

डॉ. रेखा चौहान
सै. 12, पानीपत–132103
मो. 09034507448
दूरभाष : 0180/2643700

****

राष्ट्र-सम्वर्धन

गोमदुषुणासतया श्वावद्यातमश्विना।
वर्ती रुद्रानृपाव्यम्।। यजु.20–51।।

प्रिय राज्य प्रशासन के नायक।
हो प्रजा अम्युदय उन्नायक।।
हो कहीं असत् अन्याय नहीं।
कोई अनाथ असहाय नहीं।
यम क्षमता श्रम की सराहना,
हो प्रजा कृपण कृशकाय नहीं।
सर्वशत्रुओं को भयदायक।
हो प्रजा अम्युदय उन्नानयक।।

भूमि उर्वरा गोवर्धन हों।
शक्ति सन्तुलन अश्वचरण हों।
हों अभय विहारी नर–नारी,
संगठन श्रेय संकर्षण हो।
संकल्प समुच्चय फलदायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।।

यश शक्ति सन्तुलन कितना हो।
वैदिक राजाओं जितना हो।
अखिल विश्व संरक्षण पाये,
प्रिय तुम में तप बल इतना हो।
हो विश्व तुम्हारा गुण गायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।।

देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग
अलीगढ़ 202001(उ.प्र.)

thearyasamaj.org

कविवर श्याम नारायण पाण्डेय की अमर कृति हल्दी घाटी के परिप्रेक्ष्य में महाराणा प्रताप का शौर्य, त्याग व अकबर के विरुद्ध सामरिक व कूटनीतिक विजय

• हरिकृष्णनिगम

क्या आज हमें सहसा विश्वास हो सकता है कि देशभक्ति के गीतों में सदियों से ढले, स्वधर्म व स्वदेश प्रेम की रक्षा के दीप–स्तम्भ महाराणा प्रताप जिनका जन्म 31 मई सन 1540 में हुआ था उन्होंने जब 29 जनवरी 1597 में अनेक संघर्षों के साथ जझते हुए प्राण त्यागे थे तब वे मात्र 57 वर्ष की आयु के थे। किस प्रकार शौर्य पूर्ण कार्यों की अनवरत श्रंखला द्वारा वे भावी पीढ़ी के लिए वे किस तरह एक राष्ट्रीय धरोहर बन गए थे उसमें विस्मित करने वाले दर्जनों प्रकरण आज भी हमारे सामने हैं।

साथ ही इस देश के इतिहास की इससे बड़ी त्रासदी क्या हो सकती है कि अपने समय में जिन महाराणा प्रताप के रणकौशल व बलिदान के हर क्षण को स्वयं तत्कालीन हिन्दू –मुस्लिम कवियों, पर्यटकों इतिहासकारों व दरबारी लेखकों के साथ–साथ राजवंशी राजपूतों के प्रतयक्ष दर्शी वृत्तान्तों में लिपिबन्द् व अभिलेखित किया था उन्हें ही हमारे इस इतिहास के अध्याय का विद्रीपीकरण करने वाले सहधर्मियों ने दुष्प्रचार द्वारा कलुषित करने का प्रयास किया है। उनका यशोचित मूल्यांकन करने का मनोबल आज भी विकृत इतिहास ग्रंथों के अध्येताओं में नहीं पैदा हुआ है जो एक राष्ट्रीय लज्जा था विषय है। वस्तुतः महाराणा प्रताप का नाम कोई रक्षा सम्बोधन या व्यक्तिवाचक संज्ञा मात्र नहीं है। वे तो देश काल परिभाषा का एक साकार रूप ऐसे बलिदानी सदियों में पैदा होते हैं।

पर दुराग्रही इतिहास–लेखन आज भी उस दीर्घकालीन हिन्दू वैरनीति का ऐसा प्रमाण है जिसे सिर्फ अक्षम्य मूल मात्र कहकर अनदेखा नहीं। किया जा सकता है, उसको साक्ष्यों द्वारा स्थापित करना समय की एक बड़ी मांग है। राणा प्रताप का उद्भव, उनकी रणनीति संघर्षों के बीच संगठन–क्षमता और आत्मसम्मान की अपनी परिभाषा को चुनौती देना आज की प्रचलित इतिहास पुस्तकों में जिस तरह विवादित बनाए गए है उसको स्वातंत्रयोत्तर भारत में देश का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है।

हल्दीघाटी का युद्ध इतिहास में इसलिए एक मुहावरा बन गया था क्योंकि अजेय दिखने वाले अकबर को इस युद्ध में एक चुनौती देकर सम्पूर्ण जनताका उन्होंने शार्य जगाया और तत्पश्चात व्यवहार के धरातल पर गुरिल्ला पद्धति अपनाकर उन्होंने विजय प्राप्त कर अपने जीवन काल में में मंडलगढ़ व चित्तौड़ छोडकर समस्त मेवाड़ पर विजय प्राप्त की थी जा मुगलोंक अधिकार में जा चुके थे। इसी कूटनीति के चलते अकबर की राजपूतों सम्बन्धी नीतिपूर्णतः असफल रही थी एवं प्रताप मुगल सम्बन्धी को विदेशी दासता के विरूद्ध युद्ध का स्वरूप देने में पूर्णतः सफल हुए थे। इसी नीति के कारण उन्हें हकीम खान सूर एवं जालौर के ताज खान का पूर्ण सहयोग मिला था। हकीम खान सूर ने तो हल्दीघाटी के युद्ध में सेना की आधी कमान संभाली थी। धीरे–धीरे मुगल अत्याचारों की विरोधी सभी ताकतें प्रताप की सहयोगी बनी जिसमे सिरोही ईडर, जोधपुर एवं डूगरपुर जैसी शक्तियाँ भी थी।

श्याम नारायण पाण्डेय के काव्यग्रंथ में राणा प्रताप के 1876 ई. को हुए हल्दीघाटी के युद्ध में मुट्ठी भर राजपूतों ने जिस तरह विशाल मुगलसेना के छक्के छुड़ा दिए और राणा व उसके सैनिकों ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए आगे बढ़कर मानसिंह पर सीधा आक्रमण किया था जो अनूठा था। मानसिंह छुपकर बच गया था। पर प्रताप को शत्रु के सैनिकों ने घेर लिया था। इस स्थिति में झाला माचा ने प्रताप के राज–चिन्ह त्वरितगति से अपने सिर पर धारण कर शत्रु सेना को धोखे में डाल दिया एवं स्वयं को बलिदान कर दिया। प्रताप वच कर अरावली पहाड़ियों में चले गए। राणा के मारे जाने के भ्रम में युद्ध दोपहर तक ही स्थगित हो गया एवं बचे हुए राणा के सैनिक भी मारकाट करते हुए पवर्तो में चले गए। युद्ध बिना किसी निर्णय के समाप्त हो गया था और दोनों ही पक्षों ने अपनी विजय का दावा किया। अधिकांश इतिहासकारों ने राणा को पराजित माना, पर राजस्थान के मन्दिरों में आज भी कई जगह ऐसे शिला लेख मिलते हैं कि भीलों के कारण महाराणा ही विजयी हुए थे। तातकालिक या अल्पकानिक परिणाम जो भी हुए हों , इतना तो निश्चित है कि हिन्दू मनस पटल पर इस युद्ध के दूरगामी परिणाम मेवाड़ के पक्ष में ही थे प्रताप ने मुगलों द्वारा विजित भू–भाग पर अधिपत्य करने का सश्रम अभियान निरन्तर जारी रखा हल्दीघाटी युद् के परिणामों से खीझकर अकबर ने मानसिंह की प्रताड़ना की एवं स्वयं अक्टूबर 1576 में मेवाड़ अभियान पर निकल पड़ा। उसने उदयपुर, बोसवाड़ा, डंगरपुर ईडर आदि पर अधिकार कर लिया एवं उदय पुर का नाम बदल कर मुहम्मदाबाद रख दिया था। अकबर स्वयं तो मेवाड से मालवा एवं फिर अजमेर कूच कर गया पर अपनी सेना प्रताप के विरूद्ध लगाए रखी क्योंकि वह मेवाड़ को अपनी अधीनता में लाने को किसी प्रकार भी भुला नहीं पा रहा था। 15 अक्टूबर 1577 ई. को उसने मेवाड़ पर आक्रमण हेतु बड़ी सेना देकर शाहबाज को भेजा जिसने राजधानी कुम्भ को जीत लिया एवं अनेक मन्दिरों को ध्वस्त किया। इधर प्रताप के पास प्रचुर अथभिाव था एवं दुखी होकर उन्होंने मेवाड़ त्यागने का मन बना लिया था पर सौभाग्य से इसी समय भामाशाह ने एक बड़ी धनराशी उन्हें भेंट में दी और स्वतंत्रता के युद्ध को जारी रखने की प्रार्थना की। प्रताप ने फिर अपनी सेना संगठन की एवं नवम्बर 1578 ई. मे दिवेर गांव के बड़े मुगल थाने पर आक्रमण किया। इसमें भामाशाह एवं राणा प्रताप का ज्येष्ठ पुत्र अमर सिंह भी साथ था। अकबर का चाचा सुल्तान खान यहां नियुक्त था। इस बार भी मेवाड़ व मुगल सैनिकों के बीच घमासान एवं निर्णायक युद्ध हुआ एवं सुल्तान खान अमर सिंह के हाथों एक ही भाले के वार से घोड़े सहित मारा गया एवं मुगल सेना भाग खड़ी हुई।

प्रताप की दिवेर विजय से कुद्ध होकर अकबर ने 15 दिसम्बर 1578 ई में शाहबाज खान को दूसरी बार मेवाड़ भेजा पर जब वह असफल रहा तब पुनः नवम्बर 1579 ई में बड़ी सेना देकर भेजा किन्तु थक हार कर शाहबाज खान फिर 1580 ई में लौट गया इस पर भी अकबर को चैन न मिला तब उसने इसी वर्ष के अन्त में अब्दुलरहीम खानखाना के मेवाड अभियान में लगाया पर अमर सिंह ने उसके सभी बच्चों को ही बन्दी बना लिया जिसे प्रताप ने सम्मान सहित खानखाना के पास लौटा दिया शर्मिन्दा होकर खानखासा ने 1581 ई से 1584 ई के नवम्बर तक अभियान राके दिया। 5 दिसम्बर 1504 ई. को एक फिर जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व में प्रताप की राजधानी चाबंड पर असफल आक्रमण कर वह भी निराश होकर लौट गया। सैनिक संकट प्रायः समाप्त हो गया और अल्पकान में ही 1586 ई के अन्त तक मोडलगढ एवं चितौड़ को छोड़कर सारा मेवाड राणा प्रताप के अधीन हो गया तथा मेवाड का पुननिर्माण प्रारम्भ हुआ और लोगों का स्वराज्य की अनुभूति हुई। यह प्रगति अगले 11 वर्ष तक जब तक 11 जनवरी 1597 में राणा प्रताप की असामायिक मृत्यु हुई अबाध चलती रही।

महाराणा प्रताप का जीवन चरित्र जिस तरह कविवर श्याम नारायण पाण्डेय की कृति 'हल्दीघाटी' में लिविबिद्ध है व सामाजिक महत्त्व का है क्योंकि विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने उन्होंने जिस चतुराई, कौशल और दृढ़ता के साथ शासनव्यवस्था करते हुए मेवाड के गौरव को अक्षुण्ण बनाए रखा और अपनी देश भक्ति से पूजाजनों को भी दीक्षित किया वह अविश्वसनीय था। इतिहास का वह पृष्ठ अकबर की नृशंसता एवं कुटिलता का गवाह है, पर राणा प्रताप ने उसके सामने कभी सिर नहीं झुकाया था।

पर दुराग्रही इतिहास–लेखन आज भी उस दीर्घकालीन हिन्दू वैरनीति का ऐसा प्रमाण है जिसे सिर्फ अक्षम्य मूल मात्र कहकर अनदेखा नहीं। किया जा सकता है, उसको साक्ष्यों द्वारा स्थापित करना समय की एक बड़ी मांग है। राणा प्रताप का उद्भव, उनकी रणनीति संघर्षों के बीच संगठन–क्षमता और आत्मसम्मान की अपनी परिभाषा को चुनौती देना आज की प्रचलित इतिहास पुस्तकों में जिस तरह विवादित बनाए गए है उसको स्वातंत्रयोत्तर भारत में देश का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है।

ए–1002 पंचशील हाईट्स
महावीर नगर कान्दिवली (प.)
मुम्बई 400067
मो. 9820215461

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 03-04/12/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

B.N.SAHA DAV PUBLIC SCHOOL, GIRIDIH

Co-Education, English Medium, Affiliated to CBSE, New Delhi (Science & Commerce) Upto +2 Level

Admission Open for classes L.K.G. to Std.VIII

Hostel facility Available (Boys) from Std. V Onwards

Registration Forms are available at School Office & Online at (www.bnsdav.org)
For More information:- Please Contact:- (06532)222485,224250,227004,228390
Mobile No. 09431184635, 09431366145

School Campus

Hostel Building

Sr. Principal
(Prabir Hazra)

Asst.Regional Director
(Mrs.Urmila Singh)

Facilities and Attractions:-

A truly unmatched education quality, equipped with CCTV & PTZ Camera.
Audio- Visual Classes with modern teaching methods.
Internet connected Hightech Lab with White Board, Bluetooth E-Beam facility.
Introduction of language lab for generation spoken habits.
Convented, trained, Experienced, dedicated faculties.
Safe and secure transport facilities from all existing routes.
Toy rooms, Amusement centre, Smart classes, Digital Library, Highly well equipped Science Lab.
Hobby classes for music (Vocal/Instrument/Yoga/Marital Art/ Games/Sports/Drama/Debate.
Arrangement of Indoor/Outdoor Activities.
Message Sending arrangement through Internet with RFID-Card for all students.
Parenting programmes, Exhibitions, Seminar, Buz Conference, Learning Trips & More.
Stress on Global outlook, Personality development.
Meditation, Quality education and academic discipline.
A complete English Speaking Environment.
Special classes for improving students.

with best Compliments

मुद्रक व प्रकाशक – **एस.के.शर्मा,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**